वर्ष 47 अंक 01 जनवरी 2020

हँसती दुनिया

₹15/-

हँसती दुनिया

● वर्ष 47 ● अंक 01 ● जनवरी 2020 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
16. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

विशेष/लेख

6. सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन
7. पत्र-पत्रिकाएं घर-घर में पहुँचाएं
8. गुरु-वन्दना
20. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण दिवस
: अभय कुमार जैन
22. बर्फ के होटल और महल
: विद्या प्रकाश
29. सपनों के फूलों से बना तिरंगा
: कमल सौगानी
30. चॉकलेट
: ईलू रानी
40. सबसे बड़ा विमान
: किरण बाला

कहानियां

10. फिर से पढ़ाई
: शिवचरण मंत्री
18. मोर के पैर कुरूप क्यों?
: हरिन्द्र सिंह गोगना
23. संकल्प
: डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'
28. तीन प्रेरक-प्रसंग
: किशोर डैनियल
30. खुद की भविष्यवाणी से...
: जयेन्द्र
32. बस! एक मिनट
: नीरज कश्यप
41. स्वतंत्रता सभी को प्रिय
: बलतेज कोमल
46. कोयल और कौआ
: राधेलाल 'नवचक्र'

कविताएं

9. ये भारत देश महान है
: हरिप्रसाद धर्मक
9. मेरा भारत
: संजय कुमार चतुर्वेदी
17. सर्दी के दोहे
: डॉ. रामनिवास 'मानव'
17. ठंड की रात
: कमलसिंह चौहान
27. दो बाल कविताएं
: अब्दुल मलिक खान
31. नये वर्ष का स्वागत
: महेन्द्र सिंह शेखावत
39. नववर्ष आया है...
: शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी
43. दो बाल कविताएं
: हरजीत निषाद
47. नूतन-वर्ष
: राजेन्द्र निशेश
47. नया साल
: गफूर 'स्नेही'

नव वर्ष पर लगभग हर व्यक्ति अपने मित्रों, शुभचिन्तकों, सगे-सम्बधियों, परिचितों को शुभकामनाओं के साथ उनके अच्छे स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि, यश-कीर्ति, व्यापार में वृद्धि और अनगिनत शुभ भावनाएं देता है। परिचित ही नहीं उस दिन कोई अपरिचित भी सामने आ जाए या मिल जाए तो उसको भी नववर्ष के अभिनन्दन के साथ उसका अभिवादन करते हैं।

वास्तव में शुभकामना करना या किसी के लिए मंगलकामना करना बहुत ही शुभ एवं उत्तम कार्य है। नववर्ष का पहला दिन, सप्ताह और फिर महीने के रूप में वर्ष धीरे-धीरे अपने समय के क्रम से बढ़ता चला जाता है यानि वर्ष में से हर रोज एक दिन कम होने लगता है। फिर यह पता भी नहीं चलता कि नववर्ष कब पुराना हो गया। हम सभी अपनी-अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो जाते हैं और समय अपनी गति के साथ-साथ अपनी यात्रा पूरी कर रहा होता है।

हमें नववर्ष पर अनेकों शुभकामनाएं मिलीं, मार्गदर्शन भी मिला, तन, मन, धन, से समृद्धि इत्यादि आशीर्वाद भी मिले परन्तु जिस अनुरूप से हमारे में परिवर्तन होना चाहिए, वह नहीं हो पाता। हम सभी अपने-अपने कार्य उसी तरह से करते हुए अपने स्वभाव के अनुरूप ही चलते रहते हैं।

अब चिन्तन एवं विचार का विषय यह है कि वर्ष के अन्त तक भी हमारे जीवन में उन आशीष वचनों का, शुभकामनाओं का असर उतना नहीं हुआ जितना होना चाहिए था। वस्तुतः जिस तरह हमने शुभकामनाएं एवं आशीष वचनों को प्राप्त किया वह हमारे दृष्टिकोण पर ही निर्भर था। हमने उन्हें औपचारिक रूप से ग्रहण किया और जो हमने शुभकामनाएं दीं क्या वे भी मात्र एक शिष्टाचार और औपचारिकता ही थीं।

प्यारे साथियों! इस वर्ष हम हर उस व्यक्ति को परिचित हो या अपरिचित, अमीर हो या गरीब सबको अपने हृदय से, प्रेम और पूरी श्रद्धा से शुभकामना देनी हैं। अगर शिष्टाचारवश औपचारिकता भी निभानी हो तो भी हमें अपनी ओर से उसी प्रेम एवं शुद्ध हृदय, दिल से नववर्ष की शुभकामना देनी हैं। प्रेम एवं शुद्धता हमेशा हमारा ही नहीं सभी का हृदय परिवर्तन कर देती है।

नववर्ष केवल एक समय का चक्र है। हर वर्ष एक बार हमें केवल यह याद दिलाने के लिए आता है कि जो भी नववर्ष पर हम संकल्प करते हैं या शुभकामनाएं देते हैं। उनके आंकलन का समय आ गया है।

साथियों, इस वर्ष हम इस संकल्प के साथ कि जो भी करेंगे प्रेम से, हृदय से, शुद्धता और पवित्र भावना से ही करेंगे। इस वर्ष का प्रथम सप्ताह का आचरण वर्ष के अन्तिम सप्ताह और दिन तक उसी प्रकार रहेगा जिस दिन नववर्ष के प्रथम दिन को होगा।

इसी शुद्ध एवं प्रेमभाव के साथ सम्पूर्ण हँसती दुनिया परिवार एवं जगत के हर प्राणी का हर क्षण सुखी एवं आनन्दमय हो। इसी शुभकामना के साथ–

'नव वर्ष का हर पल,
दीप जलाएं पल-पल' ... दिल से ...

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 215

इक्को इक दुनियां दा मालक मन नूं गल समझाई इक।
होर बखेड़े खत्म हो गए मुरशद तों गल पाई इक।
इक दी पूजा इक दा सिमरन मुरशद अलफ़ पढ़ाई इक।
जिस इक ने है बाकी रहणा बाबे राह दिखाई इक।
इक दे बाझों होर जो दिसदा एह सभ इत्थे रहणा ए।
कहे अवतार इस इक दी बेड़ी रूह राणी ने बहणा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इस दुनिया का मालिक एक है। यही एक प्रभु इस दुनिया को चलाने वाला है। संसार में लोग अपनी-अपनी आस्था के अनुसार परमात्मा को अलग-अलग स्वरूप में मानते हैं और अलग-अलग विधियों से इसकी पूजा-उपासना करते हैं।

ईश्वर को अनेक रूपों में मानने के कारण ही अनेक प्रकार के वाद-विवाद हैं और यही इन्सान और इन्सान के बीच झगड़ों का कारण बने हुए हैं। **'परमात्मा एक है'** इस सच्चाई का पता न होने के कारण ये वाद-विवाद खत्म होने का नाम ही नहीं लेते। ऐसे वातावरण में सद्गुरु ने अपार कृपा की और परमात्मा के वास्तविक सर्वव्यापी, निराकार स्वरूप के दर्शन कराकर सारे विवादों का अन्त कर दिया। सद्गुरु ने जब इस एक प्रभु का दर्शन कराया तब यह स्पष्ट हो गया कि हम इसको ईश्वर कहें या अल्लाह, गॉड कहें या वाहेगुरु सब एक ही परमात्मा के नाम हैं।

सद्गुरु ज्ञान की दृष्टि देकर इस अलख, अगोचर परमात्मा की लखता करा देते हैं फिर इन्सान को यह बात अच्छी तरह समझ में आ जाती है कि तत्व रूप में यह प्रभु एक ही है। यह अलग-अलग नहीं है। इसी एक परमात्मा की पूजा, इसी एक का सुमिरण करना है। इन्सान का पहला कर्तव्य इस एक प्रभु की जानकारी प्राप्त करना है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि सद्गुरु ने ही मुझे वह रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर इस एक (प्रभु) की भक्ति सम्भव है। इस एक प्रभु के अलावा जो कुछ भी नज़र आ रहा है वह साथ जाने वाला नहीं है, सब कुछ यही रह जाना है। राजा-महाराजा, अमीर-गरीब, छोटे-बड़े सभी के लिये यही नियम है कि संसार की माया संसार में ही रह जाती है। कोई तिलभर भी यहाँ से अपने साथ नहीं ले जाता।

अन्त में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि व्यक्ति प्रभु रूपी नाव पर सवार होकर ही भवसागर से पार जा सकता है अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। अन्य कोई उपाय नहीं है जिससे इन्सान का भवसागर से पार-उतारा हो सके। यह सौभाग्य केवल उन भक्तों को प्राप्त होता है जिन्होंने सद्गुरु की शरण में आकर इस एक प्रभु का बोध प्राप्त कर लिया है। हमें सद्गुरु की श्रेष्ठ शिक्षा को अपनाकर सृष्टि के मालिक को जानना है और अपना जीवन सफल करना है।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

★ इन्सान दुर्भावों को तभी छोड़ सकता है जब निरंकार प्रभु की अनुभूति कर ली जाये क्योंकि जब हम निरंकार से जुड़े रहते हैं तो किसी प्रकार के दुर्भाव हावी नहीं हो पाते।

★ जब भी हम किसी धार्मिक स्थल पर जाते हैं तो स्वत: ही मन के भाव सुन्दर, उज्ज्वल, निर्मल हो जाते हैं लेकिन ज्यों ही हम संसार में विचरण करते हैं फिर दुर्भाव हावी हो जाते हैं इसलिए इनसे बचने का एक ही उपाय है कि हम निर्मल, पावन परम अस्तित्व परमात्मा से हमेशा जुड़े रहें।

★ कैसी भी परिस्थिति हो हमारे व्यावहारिक जीवन से सुन्दर अभिव्यक्ति ही होनी चाहिए।

★ कई बार देखा जाता है कि इन्सान विपरीत भावनाओं से भरा होता है तो उसके व्यवहार से भी वही दुर्भाव प्रकट होते हैं लेकिन भक्तों का जीवन न्यारा होता है।

★ हमें परमात्मा की बनाई मूर्तियां अर्थात् इन्सानों से प्रेम और करुणा का भाव रखना है। सभी से एक समान व्यवहार करना है।

★ इन्सान अपने व्यावहारिक जीवन से ही सुन्दर वातावरण स्थापित कर सकता है।

★ हमारी प्रकृति (आचरण) मानवीयता से युक्त हो, मुकम्मल इन्सान वही है जो परमात्मा से शिकायत नहीं बल्कि प्रभु का शुकराना करता है।

★ जिस तरह कमल का फूल कीचड़ में भी खिला रहता है और अपनी अलग पहचान बनाता है। उसी तरह ब्रह्मज्ञानी वैर-विरोध, ईर्ष्या, नफरत, अहंकार से बचकर प्रभु-परमात्मा का सहारा लेते हुए हमेशा शुकराने के भाव में रहता है।

★ अपने जीवन में सही दशा और दिशा का चुनाव करना है। हमें अच्छाइयों को ही देखना है, किसी के अन्दर खामी नहीं देखनी।

★ मनुष्य जन्म दुर्लभ है। यह जन्म बड़े भाग्य से मिलता है इसलिए समय रहते परमात्मा की अनुभूति करके मानव जीवन को सफल कर लेना चाहिए।

★ परमात्मा ने अमूल्य जीवन दिया है इसे निंदा, नफरत और किसी की कमियां निकालने में न गंवाएं। हम अपना मन शुद्ध और प्रेम से सुगन्धित रखें। सुख-चैन छीनने वाले नहीं, सुख-चैन देने वाले बनें।

★ सेवा, छोटी या बड़ी नहीं होती। अगर हम सेवा कर रहे हैं और मन में अहंकार है तो फिर वह सेवा व्यर्थ हो जाती है। जो सेवा समर्पित भाव से की जाती है, वही सार्थक होती है।

★ हमें हर परिस्थिति में सेवा, सुमिरण व सत्संग को ही सर्वोपरि रखना है और किसी भी परिस्थिति में नकारात्मक विचारों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना है। सकारात्मकता प्राप्त करने का श्रेष्ठतम मार्ग सेवा, सुमिरण व सत्संग ही है।

पत्र-पत्रिकाएं
घर-घर में पहुँचाएं

– सी. एल. गुलाटी, सचिव एवं प्रभारी,
पत्रिका विभाग, सं.नि.मं., दिल्ली

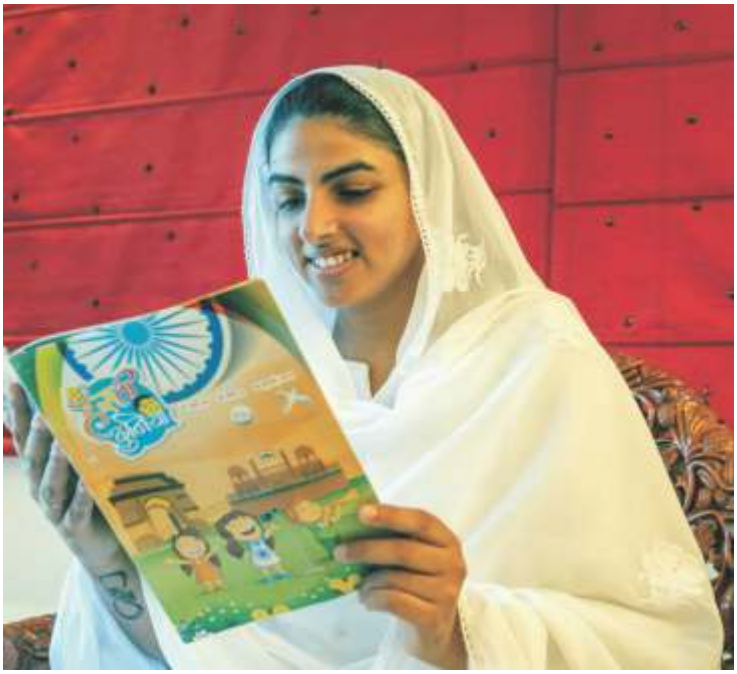

जब-जब भी पीर, पैग़म्बर, सद्गुरु प्रकट होते हैं तो संसार के उद्धार एवं परोपकार के लिए अपने आने का पैग़ाम अथवा सत्य-संदेश के प्रचार-प्रसार हेतु अनेकों साधन अपनाते हैं। इनमें मुख्य साधन है बोलकर प्रचार (Spoken words) जैसे कि नियमित रूप में सत्संग, समागम आदि। सत्य संदेश के लिए जितना बोलना लाभदायक है उतना ही महत्व लिखित शब्दों (Written words) का भी है। इसी साधन द्वारा आज हमारे पास पुरातन पीर-पैग़म्बरों के धर्म-शास्त्र उपलब्ध हैं जिनके अध्ययन से हमारे मन में प्रभु-प्राप्ति की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

आज सन्त निरंकारी मिशन ब्रह्मज्ञान द्वारा विश्व समाज में दया, करुणा की भावना स्थापित कर रहा है। अज्ञानता में जीवन जीना पाप है और ज्ञान लेकर औरों को अज्ञानता में रहने देना महापाप है। ब्रह्मज्ञान की जानकारी के साथ जुड़ी हुई एक जिम्मेदारी है कि ज्ञान लेकर घर में बैठना नहीं बल्कि इसको घर-घर में बांटना है।

जो 'शौक' तूने देखा, औरों को भी दिखा दे।
है आदमी के जिम्मे कुछ फ़र्ज आदमी के॥

सन्त निरंकारी मिशन के देश-विदेश में सत्संग भवन हैं जो, निरंकारी महात्माओं के लिए जीवन्त शक्ति (Surviving Force) हैं और मिशन की संचालक शक्ति (Driving Force) है निरंतर सत्संग और समागमों द्वारा मिशन का संदेश सम्पूर्ण विश्व तक पहुँचाने का निरन्तर कार्य कर रही है।

मिशन द्वारा 11 भाषाओं में मासिक पत्रिका सन्त निरंकारी, 4 भाषाओं में बच्चों के लिए मासिक हँसती दुनिया और 3 भाषाओं में एक नज़र समाचार पत्र द्वारा मिशन की गतिविधियां प्रकाशित की जाती हैं। मिशन के प्रचार-प्रसार में **निरंकारी पत्र-पत्रिकाओं का अभियान मांगे सबका योगदान,** अतः निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं घर-घर पहुँचाएं। सभी महात्मा आप नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और औरों को भी पढ़ायें।

बाबा हरदेव सिंह जी और सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव सिंह जी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते थे और आज सद्गुरु माता सुदीक्षा जी भी नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाएं पढ़ते हैं तो फिर सोचने वाली बात है कि हम क्यों न पढ़ें? आइए, हम सभी पत्र-पत्रिकाओं के प्रचार-प्रसार में जुट जाएं–

उठो जुटो सब सेवा में करके खूब तैयारी।
हँसती दुनिया, एक नज़र हर हाथ में सन्त निरंकारी।

संकलनकर्ता : विद्या प्रकाश

हमारे राष्ट्रीय प्रतीक

राष्ट्रीय गान
जन गण मन

राष्ट्रीय गीत
वन्देमातरम्

राष्ट्रीय वाक्य
सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय ध्वज
तिरंगा

राष्ट्रीय पशु
बाघ

राष्ट्रीय पुरस्कार
भारत रत्न

राष्ट्रीय चिन्ह
अशोक स्तम्भ

राष्ट्रीय खेल
हॉकी

राष्ट्रीय पुष्प
कमल

राष्ट्रीय मुद्रा
रुपया

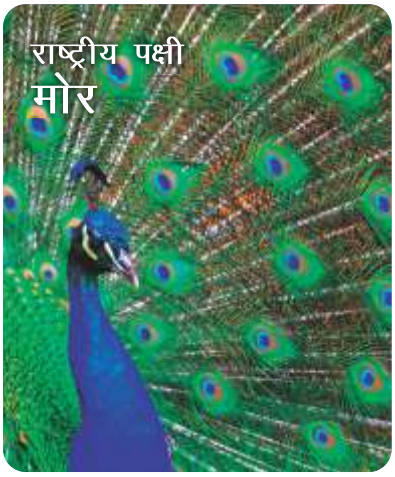

राष्ट्रीय पक्षी
मोर

राष्ट्रीय मिठाई
जलेबी

राष्ट्रीय फल
आम

राष्ट्रीय नदी
गंगा

राष्ट्रीय पर्व

26 जनवरी	15 अगस्त	2 अक्टूबर
गणतंत्र दिवस	स्वतंत्रता दिवस	गाँधी जयन्ती

कविता : हरिप्रसाद धर्मक

ये भारत देश महान है

ये भारत देश महान है,
ये मेरा देश महान है।

इसके लहराते खेतों का,
अन्न हम सबने खाया है।
कल-कल करती नदियों से,
शीतल जल हमने पाया है।।

इसके उत्पादित वस्त्र से,
अपना तन भी ढक पाया है।
इसकी पावन शालाओं में,
ज्ञान सदा हमने पाया है।।

इसके हर इक नर-नारी से,
प्यार सभी ही पाते हैं।
इसकी प्यारी मिट्टी को हम,
अपना शीश झुकाते हैं।।

इस पावन भूमि में हमने,
अपना जीवन सफल बनाया है।
ये स्वर्ग से भी महान है,
ये मेरा देश महान है।।

बाल कविता :
संजय कुमार चतुर्वेदी

मेरा भारत

देश बंटा था जब टुकड़ों में,
पटेल ने था किया योगदान।
फिर हुआ अखण्ड सदा को,
मेरा भारत देश महान।।

उत्तर में हिमालय शोभित,
जो है इसकी उत्तम शान।
दक्षिण में सागर की लहरें,
करती हैं इसका गुणगान।।

भाषा बोली अलग-अलग है,
फिर भी सबका है सम्मान।
पूरब से लेकर पश्चिम तक,
सारा इक है हिन्दुस्तान।।

कहानी : शिवचरण मंत्री

फिर से पढ़ाई

शहर का एक विख्यात उच्च माध्यमिक विद्यालय। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए बहुचर्चित विद्यालय। विद्यालय के सभी अध्यापक, अध्यापिकाएं, प्रधानाचार्य आदि बालक, बालिकाओं के लिए समर्पित थे। तदुपरान्त विद्यालय में कार्यरत प्रेम किशोर सिन्हा गणित बहुत ही अच्छा पढ़ाते थे। सब छात्र सिन्हा साहब का आदर करते थे।

नौवीं कक्षा में पढ़ने वाला छात्र मानव जहाँ बड़ा होशियार और कक्षा में सदैव प्रथम आता था, वहीं उसका साथी विभू पढ़ाई में बड़ा कमजोर छात्र था। विभू के लिए गणित ज्यादा कठिन विषय था। अब तक वह गणित में 'ग्रेस' से ही पास होता रहा था। विभू को गणित विषय से बड़ा डर लगता था। वह गणित विषय के सरल व सामान्य प्रश्न भी हल नहीं कर सकता था।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा समीप आई देख विभू अपने मित्र मानव के पास आया और बड़े नम्र स्वर में बोला– मानव, तू सिन्हा साहब का कक्षा में सबसे लाडला, चहेता विद्यार्थी है। सिन्हा साहब तेरी बात को बड़े ध्यान से सुनते हैं। तू उनके घर जा और परीक्षा में दिये गये प्रश्न-पत्र के प्रश्न पूछ आ। मैं उन प्रश्नों को रटकर पास ही नहीं अच्छे अंक ले आऊँगा और वार्षिक परीक्षा में आसानी से उत्तीर्ण हो जाऊँगा।

मानव ने विभू को सिन्हा साहब के पास जाने को मना कर दिया। पर बाद में उसकी नम आँखें देख उसे दया आ गई और एक दिन छुट्टी का मौका देखकर वह सिन्हा साहब के घर पहुँच गया और उसने सिन्हा साहब को अपने आने का कारण बता दिया।

सिन्हा साहब ने मानव को साफ शब्दों में दृढ़ता से प्रश्न-पत्र बताने से मना करते हुए अगले रविवार को विभू को उनके पास लेकर आने को कहा।

दूसरे रविवार को दोनों मित्र बताये समय पर सिन्हा साहब के घर पहुँचे। सिन्हा साहब ने बड़े प्यार से दोनों को अपने 'ड्राइंग रूम' (बैठक) में बैठाया और विभू से कहा– 'विभू बेटा, गणित विषय कठिन विषय नहीं है। पर इस विषय को समझने के लिए विषय के कतिपय मूल सिद्धांतों को भली प्रकार से समझ कर उनको बार-बार दोहराया जाये। सिद्धांतों को समझने के लिए तुम्हें कुछ दिनों के लिए मेरे पास आना होगा। मैं तुम्हें उन सिद्धांतों को एक बार नहीं कई बार समझाऊँगा, उनको बार-बार तुमसे करवाकर तुम्हारी गलतियां बताकर उन गलतियों को सही करवाऊँगा। विभू गणित विषय रटने से नहीं आता इसके लिए सतत् अभ्यास की जरूरत होती है। अतः तुम प्रश्न-पत्र के प्रश्नों को मालूम करने की बजाय मेरे पास आओ। वैसे शिक्षक के लिए प्रश्न-पत्र के प्रश्न परीक्षा से पहले बताना किसी तरह सम्भव नहीं। मेरी बात मानकर मेरे पास नियमित आते रहोगे तो तुम्हारी गणित के प्रति अरुचि समाप्त हो जायेगी। अच्छा, कल इसी

समय... मुझे किसी काम से बाहर जाना है।' कहते हुए वे चले गये।

विभू ने सिन्हा साहब की बात बड़े ध्यान से सुनी। वह अब नियमित रूप से सिन्हा साहब के घर जाने लगा और उनके बताए मार्ग पर चलने लगा। इस प्रकार गणित के कतिपय मूलभूल सिद्धांतों को समझकर, उनका सतत् अभ्यास करने पर वह गणित से घबराने के बजाय उससे प्यार करने लगा फिर से नये तरीके की पढ़ाई से विभू का गणित का भय भाग गया।

आश्चर्यजनक सत्यता

- ✯ कोई भी शताब्दी सोम, मंगल, गुरु या शनिवार से ही शुरू होती है।
- ✯ कोई भी कैलेण्डर तीस साल बाद पुनः इस्तेमाल कर सकते हो।
- ✯ सदैव एक अक्टूबर को वही दिन होगा जो एक जनवरी को।
- ✯ सदैव एक अप्रैल को जो दिन होगा वही दिन एक जुलाई को होगा।
- ✯ फरवरी, मार्च और नवम्बर मास प्रतिवर्ष एक ही दिन से शुरू होते हैं।
- ✯ शक सम्वत् का प्रारम्भ सम्राट कनिष्क ने किया था।
- ✯ अर्जेटीना की राजधानी ब्यूनस आयर्स में जनवरी माह में गर्मी पड़ती है।
- ✯ उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर क्रमशः 6 महीने की रात और 6 महीनों का दिन होता है।
- ✯ दुनिया की पहली सुबह और शाम न्यूजीलैंड में होती है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

क्या आप जानते हैं

- ✯ इटालियन भाषा दुनिया की कम अक्षर वाली भाषा है।
- ✯ नोट बनाने का कागज मकई के डंठल से बनता है।
- ✯ बैंक ऑफ हिन्दुस्तान भारत का पहला बैंक है।
- ✯ बिना पानी पीये चूहा ऊंट से भी ज्यादा दिनों तक जीवित रह सकता है।

संग्रहकर्ता : नरेश सिहाल

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

बच्चों सुनो आज मैं तुम्हे एक खलीफा की कहानी सुनाता हूँ।
खलीफा एक न्याय प्रिय व नेक इन्सान थे। उन्होंने अपने ही शाही खज़ाने से निश्चित पगार मुकर्रर कर रखी थी।
एक दिन खलीफा की बेगम ने निवेदन किया, कि तीन दिन की पगार अगर आप पहले ला दें तो ईद पर बच्चों के लिये नये कपड़े बन जाएंगे।
खलीफा पूरे दिन राजकार्य देखते और शाम को अपने काम के बदले सरकारी खज़ाने से तीन मुहरें ले जाते। घर खर्च की तुलना में वह रकम काफ़ी कम थी।

बेगम का निवेदन सुन खलीफा ने जवाब दिया।
तुम्हारी माँग उचित है।
परन्तु मैं कल तक जीवित नहीं रहा तो राज्य का कर्ज़ कौन चुकाएगा।
पहले तुम खुदा से मेरी ज़िंदगी के तीन दिनों का पट्टा लिखवा लाओ। उसके बाद मैं तीन दिन की पगार उधार ले आऊँगा।
उसकी बेगम के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था।

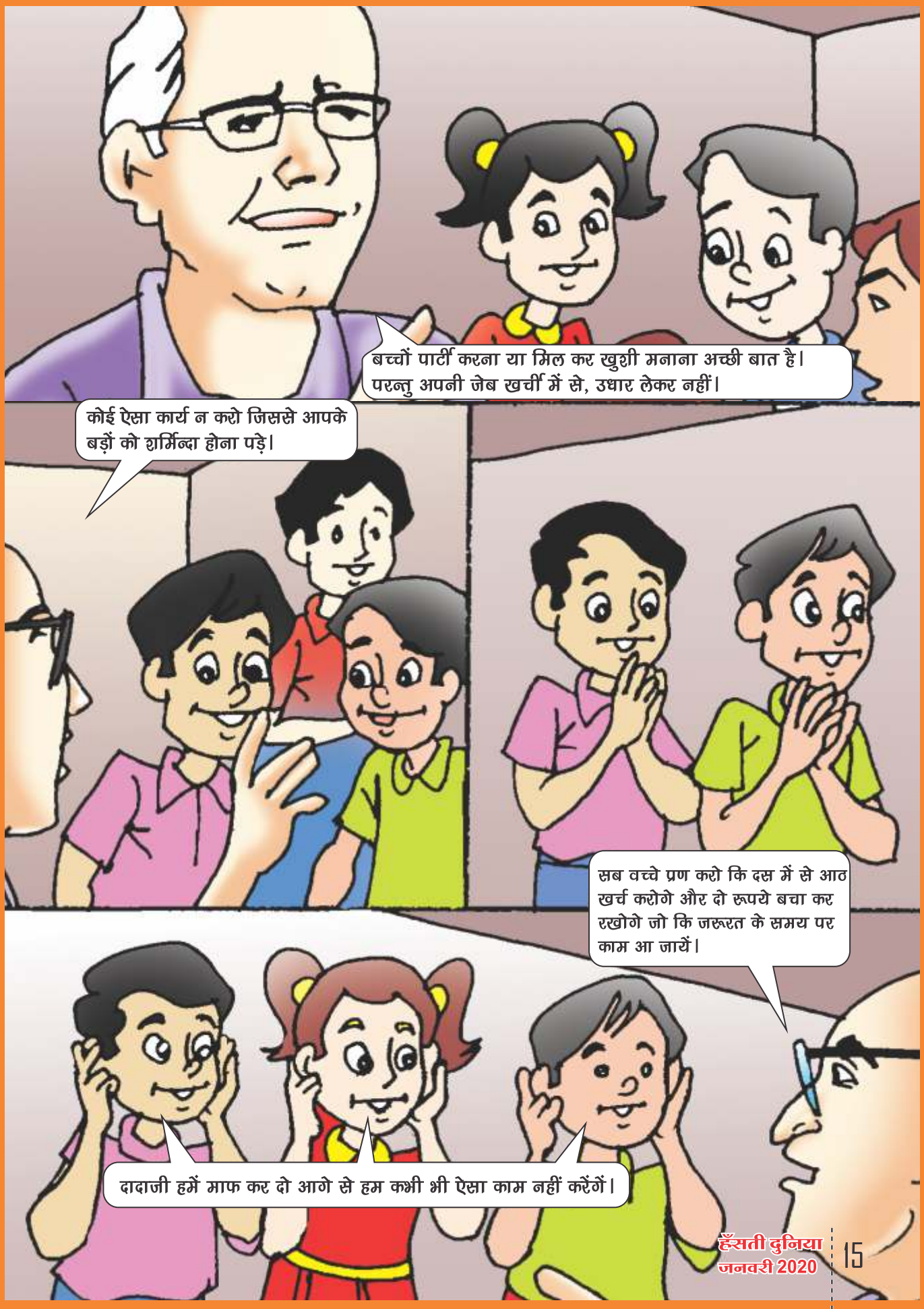
बच्चों पार्टी करना या मिल कर खुशी मनाना अच्छी बात है। परन्तु अपनी जेब खर्ची में से, उधार लेकर नहीं।
कोई ऐसा कार्य न करो जिससे आपके बड़ों को शर्मिन्दा होना पड़े।
सब वच्चे प्रण करो कि दस में से आठ खर्च करोगे और दो रूपये बचा कर रखोगे जो कि जरूरत के समय पर काम आ जायें।
दादाजी हमें माफ कर दो आगे से हम कभी भी ऐसा काम नहीं करेंगें।

ग्रीनलैंड : सदी के अन्त तक पिघल जाएगी 4.5 फीसद बर्फ

न्यूयॉर्क (आईएएनएस)। एक नये अध्ययन ने इस बात की चेतावनी दी है कि यदि दुनियाभर में ग्रीन हाउस गैस का उत्सर्जन यथावत बना रहा तो इस सदी के अन्त तक ग्रीनलैंड में 4.5 फीसद तक बर्फ पिघल जाएगी। इससे समुद्र के स्तर पर 13 इंच की वृद्धि होगी। साइंस एडवांसेस नामक पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि ऐसा भी हो सकता है कि साल 3000 तक यहाँ बर्फ ही न बचे।

अमेरिका में अलास्का फेयरबैंक्स जियोफिजिकल इंस्टीट्यूट में अनुसंधान के प्रमुख लेखक एंडी ऐशवैनडेन के अनुसार– ''आने वाले समय में ग्रीनलैंड कैसा दिखेगा, दो सौ सालों या एक हजार साल में या तो वहाँ हरे घास की भूमि होगी या आज का ग्रीनलैंड होगा, यह सब कुछ हम पर निर्भर है। इस रिसर्च में वहाँ की बर्फ की चादर में से नये आंकड़ों का इस्तेमाल किया गया ताकि भविष्य के लिए महत्वपूर्ण खोज की जा सके। यह निष्कर्ष ग्रीनहाउस गैस सांद्रता (सघनता) और वायुमंडलीय स्थितियों के लिए विभिन्न तथ्यों पर आधारित बर्फ के पिघलने और समुद्र के जल स्तर में वृद्धि के लिए परिदृश्यों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदर्शित करती है।

वर्तमान समय में, धरती ग्रीनहाउस गैस सांद्रता के उच्च अनुमानों की ओर बढ़ रही है। ग्रीनलैंड में बर्फ की चादरें काफी बड़ी हैं जो 660,000 वर्ग मील में फैली हुई हैं। आज यही बर्फ की चादरें 81 प्रतिशत ग्रीनलैंड को घेरे हुई हैं जिसमें धरती के शुद्ध जल निकायों में से आठ शामिल हैं। अध्ययन में कहा गया कि यदि ग्रीनहाउस गैस सांद्रता ऐसी ही बनी रही तो सिर्फ ग्रीनलैंड से पिघलने वाली बर्फ साल 3000 तक दुनियाभर में समुद्र के स्तर में 24 प्रतिशत वृद्धि ला सकती है जिससे सैन फ्रांसिसको, लॉस एंजेलिस, न्यू ऑलीन्स और कई अन्य शहर पानी के अंदर समा सकते हैं। इस टीम ने नासा के हवाई विज्ञान के आंकड़ों का इस्तेमाल किया जिसे 'ऑपरेशन आइस ब्रिज' कहा जाता है।

ऑपरेशन आइस ब्रिज ऐसे एयरक्राफ्ट का इस्तेमाल करता है जिसमें सभी वैज्ञानिक उपकरण होते हैं जिनमें तीन तरह के रडार शामिल हैं जो बर्फ की सतह की नाप ले सकते हैं। साल 1991 और 2015 के बीच हर साल ग्रीनलैंड की बर्फ की चादरों ने समुद्र स्तर में लगभग 0.02 इंच की वृद्धि की है और इसमें लगातार बढ़ोत्तरी जारी है।

संकलन : बबलू कुमार

प्रस्तुति : डॉ. रामनिवास 'मानव'

सर्दी के दोहे

सर्दी की ऋतु आ गई, मलती ठंडे हाथ।
सी-सी करते दिन ढले, किट-किट करते रात।।
जल से ज्यों पाला जमे, जमने लगता खून।
बर्फीला सब जग लगे, क्या मसूरी-दून।।
धूप सुहाती गुनगुनी, करती मनोविनोद।
जैसे लगती है भली, सबको माँ की गोद।।
दिन छोटे होने लगे, लम्बी होती रात।
होमवर्क और खेल का, बिगड़ गया अनुपात।।
मूंगफली मन में बसी, ज्यों काजू-अखरोट।
गली-मोहल्ले बिक रही, अब डंके की चोट।।
हरा हरा सागर कहीं, कहीं सुनहरी रेत।
दिखते हैं सब दूर तक, फैले फूले खेत।।
पढ़ने के दिन हैं यही, खूब पढ़ो दिन-रात।
गया वक्त न फिरे कभी, लाख टके की बात।।

बाल कविता : कमलसिंह चौहान

ठंड की रात

ठंड में ठिठुरी रात सुहानी,
दादी अम्मा कहें कहानी।
ठंड में ठिठके पैर सभी के,
बिखरी चांदनी रात की रानी।।

पानी जमने लगा यहाँ पर,
गर्म चाय फैली हाथों पर।
मुँह से धुँआ निकलता देखो,
ठंड में याद आती है नानी।।

ओढ़ी रजाई कम्बल सबने,
गरम पकौड़े खाए सबने।
थोड़ी गर्मी मिली तसल्ली,
लगता कितना ठंडा पानी।।

सुबह हुई और सूरज आया,
सबके मन को कितना भाया।
ठंड में फिर भी कमी न आई,
शीत ऋतु करती मनमानी।।

बाल कथा : हरिन्द्र सिंह गोगना

मोर के पैर कुरूप क्यों

यह उस समय की बात है जब मोर के पैर उसके रूप की तरह सुन्दर ही थे। उसे अपनी सुन्दरता पर गर्व था। वह सब पक्षियों में अपनी धाक जमाता कि उस जैसा रूपवान पक्षी इस दुनिया में और कहीं नहीं। प्रकृति ने उसे सिर से लेकर पैरों तक खूबसूरती का खजाना दिया है।

एक बार मोरों का समूह एक तालाब पर पानी पीने के लिए उतरा। तालाब के दूसरी ओर एक घने वृक्ष के नीचे एक मुनि योग साधना में लीन बैठे थे। उनके पास ही एक सांप अपना फन उठाए मुनि को डसने के लिए तैयार था।

तभी मोरों के राजा चित्रगुप्त ने यह देखा। बिना देर किए वह उड़कर सांप पर झपटा और कुछ देर घात प्रतिघात करने के बाद उसने सांप का अन्त कर दिया। अब तक मुनि का ध्यान भी टूट चुका था। वह सारा माजरा समझ गए।

उन्होंने खुश होकर चित्रगुप्त को कोई वर मांगने के लिए कहा।

चित्रगुप्त ने अपने साथियों से विचार-विमर्श किया और फिर मुनि से बोला– हे महात्मा, हमें अपने पैरों से बहुत स्नेह है। आप अगर वर देना चाहते हैं तो यह दीजिए कि हमारे पैर सोने के हो जाएं।

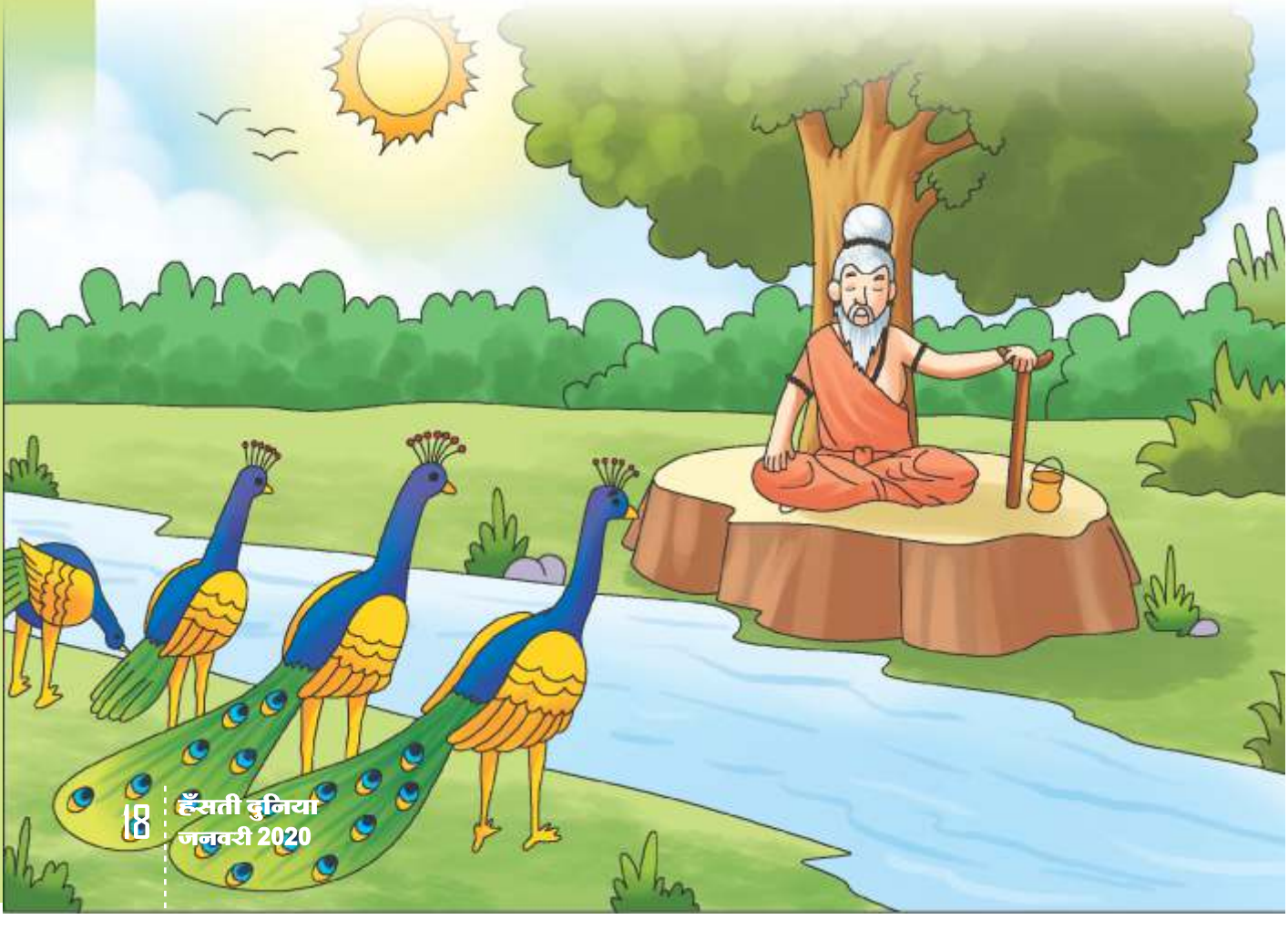

मुनि बोले– बहुत खूब। फिर उन्होंने कुछ देर के लिए अपनी आंखें मूंदी और कुछ क्षणों के पश्चात् ही सभी मोरों के पांव सोने के हो गए।

मोरों को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। उनकी सुन्दरता और ज्यादा बढ़ गई थी। मारे खुशी के उनके पांव जमीन पर नहीं लग रहे थे। इसी प्रसन्नता में वह मुनि को धन्यवाद कहना भी भूल गए।

तभी अचानक वर्षा होने लगी। यह देख मोर मस्ती में नाचने लगे। उन्हें मुनि की उपस्थिति का ध्यान भी न रहा। उनके ऐसा करने से उनके पैरों से उछले कीचड़ के कुछ छींटे मुनि के मुख पर पड़े।

मुनि क्रोधित हो उठे और बोले– घोर अपमान, मैंने तुम्हारी सुन्दरता बढ़ाकर तुम्हें सम्मान दिया और तुम लोगों ने मुझ पर छींटे डालकर मेरा ही अपमान किया। मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि इसी क्षण तुम्हारे पैर इतने कुरूप हो जाएं कि तुम इन्हें देख हमेशा आंसू बहाओ।

और ऐसा ही हुआ। उसी क्षण मोरों के स्वर्ण पैर कुरूप हो गए। उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ। वे मुनि से क्षमा मांगने लगे और श्राप वापस लेने के लिए निवेदन किया। मगर मुनि का श्राप कमान से निकले तीर की तरह था।

आज भी आकाश में छाए हुए बादलों को देखकर जितनी खुशी मोर को होती है उससे कहीं अधिक दु:ख उसे अपने पैरों की कुरूपता देखकर होता है। वह उदास होकर आंसू बहाने लगता है।

–कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि अपनी किसी भी उत्तम वस्तु के अभिमान में इतना मस्त नहीं हो जाना चाहिये कि मर्यादा ही भूल जायें।

प्रस्तुति : अभयकुमार जैन

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण दिवस

हमारे देश में विभिन्न जाति, सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। त्योहारों, राष्ट्रीय त्योहारों के अतिरिक्त जयन्तियां भी मनाई जाती हैं। इनके अलावा वर्ष में कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाये जाते हैं, जो विविधता में एकता का प्रतीक हैं।

हिन्दू संस्कृति में मकर संक्राति ही ऐसा त्योहार है जो 14 जनवरी को मनाया जाता है। बाकी के होली, दिपावली, रक्षाबंधन, गुरु नानक जयन्ती, महावीर जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, ईद, इत्यादि त्योहार एवं जयन्तियां निश्चित दिनांक पर नहीं आती हैं, तिथियों के अनुसार आती हैं।

'बड़े दिन' अर्थात् 'क्रिसमस डे' को एक निश्चित तारीख 25 दिसम्बर को ही मनाया जाता है।

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवस

जनवरी 14 : मकर संक्रांति
15 : थल सेना दिवस
23 : नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती
26 : गणतन्त्र दिवस
30 : शहीद दिवस

फरवरी 28 : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

मार्च 04 : राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
08 : अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
14 : विश्व उपभोक्ता दिवस
17 : समुद्री परिवहन दिवस
20 : विश्व विक्लांग दिवस
23 : भगत सिंह पुण्य दिवस

अप्रैल 07 : विश्व स्वास्थ्य दिवस
14 : अग्निशमन सेवा दिवस
22 : विश्व भू दिवस

मई 01 : मजदूर दिवस
04 : रेडक्रास दिवस
31 : विश्व तम्बाकू निवारण दिवस

जून 05 : विश्व पर्यावरण दिवस

जुलाई 11 : विश्व जनसंख्या दिवस

अगस्त 15 : स्वतन्त्रता दिवस

सितम्बर 14 : राष्ट्रीय राजभाषा दिवस

अक्टूबर **प्रथम सोमवार : विश्व आवास दिवस**
02 : गाँधी व शास्त्री जयन्ती / राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस
09 : विश्व डाक दिवस
10 : विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
14 : विश्व मानक दिवस
15 : विश्व खाद्य दिवस
24 : संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस
30 : विश्व बचत दिवस

नवम्बर 14 : बाल दिवस
17 : प्रादेशिक सेना दिवस / विश्व स्वास्थ्य दिवस
19 : नागरिक दिवस / इन्दिरा गाँधी जयन्ती
25 : मांसाहार रहित दिवस

दिसम्बर 01 : विश्व एड्स दिवस
04 : नौसेना दिवस
07 : झण्डा दिवस
08 : बालिका दिवस
10 : मानव अधिकार दिवस
11 : यूनिसेफ दिवस
14 : राष्ट्रीय ऊर्जा दिवस
23 : किसान दिवस
25 : क्रिसमस डे

बर्फ के होटल और महल

रोचक जानकारी : विद्या प्रकाश

ईंट, सीमेंट, बालू, लोहे की सरिया तथा पत्थर की पटियों से निर्मित मकानों को तो सभी ने देखा है मगर बर्फ से निर्मित होटल तथा महल की कल्पना आश्चर्यजनक है।

विश्व में पहली बार बर्फ का होटल सन् 1990 में उत्तरी स्वीडन के लेपलैंड इलाके के युकासजार्वी ग्राम में बनाया गया था जो उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में आर्कटिक सर्किल से 200 किलोमीटर उत्तर में स्थित है तथा जहाँ भीषण सर्दी पड़ती है। विगत 30 वर्षों से यह होटल लगातार दिसम्बर से अप्रैल माह तक चलता है और इन दिनों यह होटल स्थानीय तथा दूर-दराज से आने वाले ग्राहकों से गुलजार रहता है। ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत होते ही यह होटल पिघल जाता है तथा वह उसी टोर्न नदी में समाहित हो जाता है जिसकी बर्फ से इसे तैयार किया जाता है।

प्रारम्भ में मात्र 60 वर्गमीटर के दायरे से बढ़ते-बढ़ते अब यह 5000 वर्गमीटर के क्षेत्रफल तक विस्तृत हो चुका है। इस होटल में आने वाले मेहमानों के लिए कुल 80 कमरे हैं तथा उन्हें अलग-अलग वर्गों में बांटा गया है। जैसे आर्ट स्वीट, आइस रूम और स्नो रूम। यहाँ सिनेमा हाल तथा कला दीर्घा भी है जो बर्फ निर्मित है। होटल के अन्दर का तापमान शून्य से चालीस डिग्री नीचे अथवा उससे भी कम रहता है। यहाँ विशेष प्रकार के रेफ्रिजरेटर भी हैं जो खाद्य पदार्थों को गर्म रखते हैं। इस होटल में खाने की प्लेट तथा कटोरियां भी बर्फ की हैं।

इसी प्रकार कनाडा के क्यूबेक प्रान्त में सेंट जोसेफ झील के किनारे स्थित आइस होटल भी विश्वविख्यात है। मांट्रियल से लगभग 230 किलोमीटर दूर इस होटल में ग्राहकों का मनपसन्द सब कुछ मिलता है, मगर ठंडा-ठंडा 'कूल-कूल।' गर्म भोजन या पेय पदार्थ यहाँ के मेन्यू में शामिल नहीं है। इस होटल की फर्श, दीवार, छत, बिस्तर, लैम्प और फर्नीचर यानी सब कुछ बर्फ का ही बना हुआ है। लगभग 2700 वर्गमीटर के क्षेत्रफल में विस्तृत यह होटल सूरज की उजली रोशनी में किसी हीरे की तरह चमकता तथा अपनी बेमिसाल खूबसूरती की छटा बिखेरता है। इस होटल की शुरुआत सन् 2000 में हुई। हर साल इस होटल को बनाने के लिए कारीगर स्टील के खांचों में बर्फ भरकर उसके सख्त होने का इन्तजार करते हैं। स्नो बलोगर मशीनों से इन पर बर्फ की बौछार की जाती है। बर्फ के बिस्तर पर आराम और सकून से नींद का आनन्द लिया जा सके, इसके लिए हिरण की खाल से बने गद्दे बिछाये जाते हैं। हैरानी की बात यह है कि यहाँ बाहर का तापमान गिरकर कभी-कभी शून्य से 43 डिग्री तक नीचे चला जाता है मगर अन्दर का तापमान शून्य से चार या पांच डिग्री नीचे तक रहता है।

न केवल होटल, बल्कि महल भी बर्फ से बनाये जाते हैं। बर्फ का पहला महल लगभग 175 साल पहले रूस के सेंट पिट्र्सबर्ग में वहाँ की महारानी ने बनवाया था। विश्व के अनेक देशों में भी मनोरंजन के उद्देश्य से बर्फ के किले अथवा महल बनाये जाते हैं।

कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आश्ट'

संकल्प

नेहा की आयु आठ वर्ष की थी। वह तीसरी कक्षा में पढ़ती थी। स्कूल में पी.टी.ए. की मीटिंग होती तो मम्मी ही जाती थीं। नेहा कुछ और बड़ी हुई तो उसे पता चला कि उसके पिताजी सैनिक हैं और साल में एक-दो बार ही घर आते हैं।

एक दिन जब स्कूल में पी.टी.ए. की मीटिंग हुई तो किसी कारण उसकी मम्मी स्कूल न आ पाई। रीना मैडम उससे उसकी मम्मी के बारे में पूछ रही थी। नेहा बार-बार कक्षा से बाहर आकर अपनी मम्मी की बाट जोह रही थी लेकिन उसे मम्मी दिखाई न दी। ज्यों-ज्यों स्कूल की छुट्टी होने का समय नजदीक आ रहा था, त्यों-त्यों नेहा को मन ही मन मम्मी पर गुस्सा आ रहा था। आखिर स्कूल में छुट्टी हुई तो नेहा सीधी घर आई और प्रवेश करते ही मम्मी को आवाजें देने लगीं– मम्मी... मम्मी...।

अन्दर से आवाज आई– 'आ जा बेटी अन्दर आ जा।' यह पड़ोसन चाची जी की आवाज थी।

जब नेहा कमरे में आई तो देखा कि उसकी मम्मी बिस्तर पर पड़ी हैं और उनके सिर पर पट्टी बंधी हुई है। उनके साथ पड़ोस वाली चाची जी बैठी हुई थीं। नेहा को पता चला कि जब उसकी मम्मी स्कूल में मीटिंग के लिए आ रही थी तो रास्ते में उनका एक्सीडेंट हो गया था। उनके सिर पर गहरी चोट लगी थी। उसी समय उधर से पड़ोसन चाची भी गुजर रही थीं। वह उन्हें फौरन नजदीक के एक डॉक्टर के पास ले गई और वहाँ से मरहम-पट्टी करवाकर वे उन्हें घर ले आई थीं।

नेहा एकदम घबरा गई लेकिन चाची जी और मम्मी ने उसे धैर्य दिया। नेहा को मन ही मन अपने पर गुस्सा आने लगा कि वह खामख्वाह मम्मी पर गुस्सा हो रही थी। उसे क्या पता था कि मम्मी किस हालत में हैं?

चाची जी चले गए तो नेहा मम्मी से पूछने लगी– 'मम्मी, पापा घर क्यों नहीं रहते? यदि वे घर होते तो आपकी जगह पर पी.टी.ए. की मीटिंग में वे आ सकते थे। आपको खामख्वाह...।'

यह बात सुनकर नेहा की मम्मी बोली– 'बेटी, तुम्हारे पापा सैनिक हैं। सैनिकों को छुट्टी कम मिलती है।'

'लेकिन मम्मी...।' नेहा की बात अधूरी ही थी कि मम्मी मुस्कुरा कर बोली– 'बेटी, तुम अभी बहुत छोटी हो। जब बड़ी हो जाओगी तो तुम्हें सब कुछ पता चल जायेगा। सैनिक होना बहुत गर्व की बात है। सैनिक ही तो हमारे देश की रक्षा करते हैं। देश की रक्षा के लिए वे अपनी जान भी हँस-हँसकर न्यौछावर कर देते हैं। इसलिए इन्हें सरहद के जांबाज कहा जाता है।'

नेहा कुछ और बड़ी हुई तो उसकी समझ में आया कि उसके पिताजी सियाचिन गलेशियर पर भी ड्यूटी करते हैं।

एक दिन नेहा स्कूल से घर आई और मम्मी से बोली– 'मम्मी, हमारी कक्षा में एक लड़की रमा ने प्रवेश किया है। वह कहती है कि उसके पिताजी भी फौज में हैलीकॉप्टर के पायलट हैं। क्या वह भी सैनिक हैं?'

मम्मी ने बताया– 'हाँ, बिल्कुल वो भी सैनिक हैं। वो भी तो हमारे देश की रक्षा के लिए चुनौती भरी उड़ानें भरते रहते हैं।'

नेहा सवाल पर सवाल कर रही थी– 'मम्मी, उनका वहाँ क्या काम होता है? क्या उनके पास भी बंदूक होती है और वो भी दुश्मनों का मुकाबला करते हैं?'

नेहा की सेना में रुचि देखकर मम्मी के चेहरे पर फिर मुस्कान फैल गई और बोलीं– 'लगता है तुम भी अपने पापा की तरह सैनिक बनोगी। जो इतने सवाल पूछ रही हो।'

यह सुनकर नेहा बोली– 'बताओ न मम्मी, क्या पायलट के पास भी बंदूक होती है?'

मम्मी ने जवाब दिया– 'नेहा, सेना के पायलट के पास भी कोई न कोई हथियार होता है क्योंकि न जाने किस स्थिति में उनका मुकाबला दुश्मन से हो जाए। वैसे तुम्हें बता दूँ कि पायलट का मुख्य काम सरहद पर जहाँ दुश्मन की गोलाबारी अक्सर होती रहती है या खराब मौसम व दुर्गम ऊँचाइयों पर जाकर हमारे सैनिकों की मदद करना है। गोलाबारी में हमारे सैनिक भी तो घायल हो जाते हैं न? पायलट अपना हैलीकॉप्टर वहाँ उचित स्थान पर उतारता है और घायल सैनिकों को हैलीकॉप्टर से आर्मी के अस्पतालों में ले आता है।'

नेहा अभी मम्मी से बातें कर ही रही थी कि घंटी बजी। नेहा ने फौरन दरवाजा खोला तो देखा उसकी सहेली स्वीटी थी। उसे याद आया कि उन्होंने तो अभी अपनी एक और सहेली रूबीनिया के घर उसके जन्मदिन पर जाना है। वह तैयार हुई और स्वीटी के साथ रूबीनिया के घर की ओर रवाना हो गई।

कुछ दिनों के बाद जब नेहा के पापा छुट्टी लेकर घर आये तो वह उनके गले लिपट गई और बोली– 'पापा, तुम्हारी कैसी नौकरी है? मेरी सहेलियों के पापा तो आमतौर पर घर ही रहते हैं या फिर दफ्तर से नौकरी करके शाम को घर लौट आते हैं लेकिन एक आप हैं जो इतना लम्बा समय लगा देते हैं घर आने में। पापा तुम यह नौकरी छोड़ दो।'

नेहा की यह बात सुनकर उसके पापा ने उसका सिर चूमा और बोले– 'यदि मैं और हमारे सैनिक मित्र नौकरी छोड़कर घर बैठ जायें तो पता है क्या होगा?'

'क्या होगा पापा?' नेहा की उत्सुकता बढ़ गई।

'हमारे दुश्मन हमारे देश पर कब्जा कर लेंगे। हम सरहद पर जाकर उनके दांत खट्टे करते हैं। भले ही हमारी जान चली जाए लेकिन हम अपने देश को आंच तक नहीं आने देते।'

जब भी नेहा के पापा छुट्टी लेकर घर आते, नेहा अपने पापा और उनके दोस्तों की बहादुरी के किस्से सुनकर खुश होती रहती और उसका मन अपने देश के बहादुर सैनिकों के प्रति श्रद्धाभाव से भर जाता।

छुट्टी काटकर नेहा के पापा फिर सरहद पर लौट गये।

एक दिन नेहा के पापा का फोन आया कि अब उनकी ड्यूटी कारगिल में लगी है क्योंकि कारगिल में युद्ध छिड़ गया है और अब उनकी कम्पनी कारगिल युद्ध के लिए रवाना हो रही है।

दूरदर्शन और रेडियो पर निरंतर खबरें आ रही थीं। दैनिक समाचारपत्रों में सुर्खियां छपने लगीं। कुछ दिन तो नेहा की अपने पापा से अपनी और मम्मी की बातें चलती रहीं लेकिन फिर सम्पर्क टूट गया। नेहा का दिल धक-धक करने लगा। मम्मी भी मन ही मन डर रही थीं लेकिन उन्होंने नेहा को इसका अहसास तक न होने दिया। नेहा स्कूल जाती तो उसका मन पढ़ाई में न लगता। अपने पिताजी की तरफ ही लगा रहता। उसके दिलो-दिमाग में कभी गोलियों की और कभी बमों की आवाजें घूमती रहतीं।

फिर किसी जान पहचान वाले से पता चला कि नेहा के पापा और उनके दूसरे सैनिक मित्र पूरी मुस्तैदी से डटे हुए हैं।

नेहा का जन्मदिन इसी महीने के अन्त में आ रहा था। सरहद पर जाते समय उसके पापा उससे वादा करके गये थे कि वह उसके जन्मदिन पर जरूर आयेंगे।

युद्ध रूकने का नाम ही नहीं ले रहा था। ज्यों-ज्यों नेहा के जन्मदिन की तारीख नजदीक आ रही थी, नेहा मन ही मन खुश हो रही थी। अपनी कई सहेलियों को उसने पहले से ही निमंत्रण दे रखा था और साथ ही यह बात भी विशेषतौर पर कहा था कि

उसके पिताजी भी उसके जन्मदिन पर छुट्टी लेकर आ रहे हैं।

नेहा के जन्मदिन में केवल तीन ही दिन रह गए थे।

एक दिन अचानक ही रात को नेहा की मम्मी के मोबाइल की घंटी बजी तो नेहा की मम्मी का दिल धक्-धक् करने लगा। उन्होंने एकदम कहा– हैलो...।

फोन पर सेना अधिकारी बोल रहा था। जब नेहा की मम्मी ने अनहोनी बात सुनी तो उनकी चीख निकल पड़ी लेकिन उन्होंने अपने दर्द को एकदम सीने में दबा लिया और पूरे विश्वास और शक्ति इकट्ठी करके नेहा को इस घटना के बारे में बता दिया तो नेहा फूट-फूटकर रोने लगी।

कारगिल युद्ध में जब नेहा के पिताजी दुश्मन पर ताबड़तोड़ फायर करके उन्हें खदेड़ते हुए आगे बढ़ रहे थे तो अचानक एक-एक करके दो गोलियां उनकी टांग में लगीं। उन्हें फौरन सैनिक अस्पताल में लाया गया। डॉक्टरों ने बताया कि उनकी टांग को बहुत नुकसान पहुँचा है जिसके कारण टांग फौरन काटनी पड़ेगी वर्ना और ज्यादा हानि हो सकती है।

निर्णय फौरन लेना था। इसलिए डॉक्टरों की सलाह के मुताबिक वही करना पड़ा।

तब तक नेहा और मम्मी अस्पताल पहुँच चुके थे।

जिस दिन वे अस्पताल पहुँचे, उसी दिन नेहा का जन्मदिन था।

अब तक नेहा के पिताजी होश में आ चुके थे लेकिन उनके चेहरे पर विजयी अंदाज की मुस्कान थी। वह गर्व से बता रहे थे कि उन्होंने कैसे अपने देश के दुश्मनो को आगे बढ़ने से रोका और मुँह की खाकर पीछे भागने के लिए मजबूर कर दिया।

अब धीरे-धीरे माहौल बदलने लगा। नेहा के पिताजी नेहा की आँखों में आंसू देखकर मुस्कुरा रहे थे और कह रहे थे– 'बहादुर बाप की बेटी की आँखों में आंसू?'

फिर उन्होंने नेहा की आँखों से आंसू पोंछते हुए कहा– 'नेहा मैं तो भूल ही गया था आज तो तुम्हारा जन्मदिन है, बोलो क्या चाहिए?'

नेहा कुछ पल सोचती रही। फिर बोली– 'जो कुछ मांगूगी, पूरा करोगे वादा करो।'

'अपनी बेटी के जन्मदिन पर उसकी हर इच्छा पूरी करूंगा।'– पिताजी बोले।

'जब मैं बड़ी हो जाऊँगी तो आप मुझे सैनिक बनायेंगे ताकि मैं आपके सपनों को पूरा कर सकूं।'

'ये हुई न बहादुर पिता की बहादुर बेटी वाली बात।' इतना कहकर उन्होंने नेहा को गले लगा लिया। फिर उसका माथा चूमते हुए बोले– 'बेटी, तुम्हारा सपना पूरा होगा। अब मैं विकलांग नहीं रहा।'

नेहा पिताजी से लिपट गई। पास खड़े एक सैनिक ने नेहा को सैल्यूट किया।

नेहा की मम्मी के चेहरे पर मुस्कान थी।

दो बाल कविताएं :
अब्दुल मलिक खान

सर्दी मौसी

ठंडी, ठंडी सांस छोड़ती
सर्दी मौसी आई,
लगी पूछने घर में कितने
कम्बल और रजाई।

कितने स्वेटर कितने मफलर
कितने शाल दुशाले,
उसके आते ही मम्मी ने
बाहर सभी निकाले।

थर-थर करती बोली मौसी
ये तो कम हैं भाई,
और मंगाओ और मंगाओ
कम्बल और रजाई।

जाड़े की धूप

जाड़े की सर्दीली धूप,
सरसों जैसी पीली धूप।

सुबह हुई तो घर से निकली,
सोने-सी चमकीली धूप।

कोहरे की चादर में लिपटी,
लगती गीली-गीली धूप।

हरे-भरे खेतों में फैली,
हँसती छैल-छबीली धूप।

शकरकंद, गाजर का हलवा,
खाती बड़ी रसीली धूप।

जले फर्र से फिर बुझ जाए,
ज्यों माचिस की तीली धूप।

रोज शाम को जल्दी-जल्दी,
छिप जाए शर्मीली धूप।

तीन प्रेरक-प्रसंग : किशोर डैनियल

दृढ़-निश्चय बालक

एक बालक बड़ा ही तीक्ष्ण बुद्धि और दृढ़संकल्पी था। वह मेहनती भी कम नहीं था। वह जिस स्कूल में पढ़ता था उस स्कूल के प्रबन्धकों ने यह नियम निश्चित कर रखा था कि पेन्सिल, कलम, किताब, कापियां आदि स्कूल से ही खरीदी जायें।

एक दिन उस बालक ने इस गलत एवं मनमाने नियम को खत्म करने की बात प्रिंसिपल साहब से की लेकिन उसका प्रयास बेकार गया परन्तु वह बालक तो दृढ़-निश्चयी था, उसने हिम्मत नहीं हारी परन्तु उसने स्कूल के विद्यार्थियों को अपनी बात से सहमत कर सभी छात्रों को साथ लेकर पुरजोर विरोध किया तो आखिर स्कूल प्रशासन को उनकी बात माननी पड़ी।

जानते हो बच्चो, वह बालक कौन था? वह बालक था सरदार वल्लभ भाई पटेल जो आगे चलकर देश को आजाद कराने के लिए स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

सेवा भावना

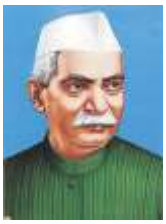

एक बार किसी नदी में बाढ़ आई। कई गाँव उस बाढ़ की चपेट में आ गये। करोड़ों की सम्पत्ति पानी में बह गई। सारी फसलें नष्ट हो गईं। ऐसी स्थिति में लोग भूखे मरने लगे।

ऐसे समय में एक व्यक्ति ने अपना काम-काज छोड़कर घर-घर जाकर बाढ़ पीड़ितों के लिए रुपये-वस्त्र एवं खाने-पीने का सामान इकट्ठा किया और उन रुपयों से उसने बाढ़ पीड़ितों की मदद की। रात-दिन वह नाव में चढ़कर बाढ़ पीड़ितों की मदद करते रहे।

जानते हो, बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने वाला कौन था? ये थे हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

सामना करो

एक बार स्वामी विवेकानन्द जी काशी में किसी जगह जा रहे थे। उस जगह एक तरफ तालाब और दूसरी तरफ ऊँची दीवार थी। तालाब के किनारे एक बरगद का पेड़ था। जिस पर बहुत सारे बन्दर रहते थे। स्वामी जी को अकेला देख बन्दरों ने उन पर हमला कर दिया।

बन्दरों को हमला करते देख स्वामी जी भागने लगे। वे जितना दौड़ते बन्दर भी उतनी ही तेजी से उनका पीछा करने लगे। अब तो उनके लिए बन्दरों से छुटकारा पाना मुश्किल हो गया। ठीक उसी समय पीछे से किसी ने आवाज दी– 'बन्दरों का सामना करो, भागो मत।' आवाज सुनकर जैसे ही स्वामी जी मुड़कर खड़े हुए बन्दर सहम गये और धीरे-धीरे पीछे हटने लगे।

इस घटना से हमें भी शिक्षा मिलती है कि मुसीबत आने पर पीठ दिखाकर भागो मत बल्कि उसका सामना करो। मुसीबत से हम जितना भागेंगे। वह उतना ही हमारा पीछा करेगी।

विशेष लेख : कमल सौगानी

सपनों के फूलों से बना तिरंगा

उन दिनों फ्रांस में एक भारतीय महिला रहती थी, जिसे श्रीमती कामा के नाम से जाना जाता था। वह महिला अक्सर तरह-तरह के झंडे बनाकर बच्चों में बांट दिया करतीं। एक दिन एक हिन्दुस्तानी बच्चे ने उससे कहा– आंटी! तुम अपने देश का कोई ऐसा शानदार झंडा बनाओ जो हिमालय की चोटी पर शान से हवा में लहरा सके।

यह सुनकर श्रीमती कामा ने सोचा– 'इस बच्चे के विचार तो अच्छे हैं, वैसे भी अब तक अपने देश का कोई स्थायी राष्ट्रीय ध्वज नहीं बना है।'

अब श्रीमती कामा को चिन्ता लगी– 'भारत के लिए झंडा कैसा बनाया जाए?' एक रात उसने सपने में देखा कोई परी उसे तीन तरह के पुष्प दे रही है और कह रही है, इन फूलों के रंगों से झंडा बनाओ।'

सुबह नींद खुली तो रात वाला सपना मस्तिष्क में तरोताजा था। परी के फूलों के मुताबिक उसने केसरिया सफेद और हरे रंग के कपड़ों की पट्टियां जोड़कर झंडे का निर्माण किया। फिर इसके बीच चरखे का चिन्ह बनाया गया।

ठीक 7 जुलाई, 1907 के दिन श्रीमती कामा ने उस बच्चे को हिन्दुस्तानी झंडा बनाकर दिया। यह झंडा लेकर वह बच्चा मोहल्ले में दिनभर घूमता रहा और बोला– 'अब तो हम हिन्दुस्तानियों का भी झंडा बन गया। जब मैं अपने साथियों के साथ हिमालय पर्वत पर जाऊँगा तब इसे बड़ी शान के साथ फहराऊंगा।'

1931 में यह झंडा भारत आया। स्वतंत्रता सेनानियों ने इसका बड़ा स्वागत किया। स्वतंत्रता सेनानियों एवं महात्मा गाँधी के अनुरोध पर झंडे में चरखे के स्थान पर 'वन्देमातरम्' लिख दिया।

1947 में देश के आजाद होने के उपरान्त तिरंगे के रंगों और क्रम पर फिर से विचार करने के लिए 'राष्ट्र ध्वज' समिति बनाई गई जिसने सुझाव दिया कि चरखे के स्थान पर चक्र रखा जाए।

अन्त में तय हुआ कि सबसे पहले केसरिया, फिर सफेद और अन्त में हरे रंग की पट्टियां रखी जाएं जिनकी लम्बाई चौड़ाई का अनुपात तीन और दो फुट हो तथा सफेद पट्टी के मध्य उसी की चौड़ाई के बराबर चक्र का निशान हो। 22 जुलाई 1947 को तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज का दर्जा दिया।

फिर इस तरह के लाखों झंडे बनाकर हिन्दुस्तान के गाँव-गाँव तक भिजवाये गये। हर नागरिक ने इस राष्ट्रीय ध्वज का हार्दिक अभिनन्दन किया।

प्रेरक-प्रसंग : जयेन्द्र

वह खुद की भविष्यवाणी से लार्ड ऑफ लंदन

लंदन में एक छात्र था। उसका नाम विलिंगटन था। वह बहुत ही गरीब था। स्कूल में हर वक्त फटे वस्त्र तथा फटे जूते पहन कर जाया करता।

दरअसल, वह मन ही मन सोचा करता, ये सहपाठी गरीब होने के कारण ही मेरा मजाक उड़ाते हैं। कई बार जब वह यह बात गम्भीरता से गले उतारता तो एकांत में खूब रोया करता, फिर अपने आप से ही समझौता कर, गरीबी की बात भूल जाता और पढ़ाई करने में मस्त हो जाता।

चूंकि विलिंगटन के घर बिजली नहीं थी। इस कारण वह रात्रि में स्ट्रीट लाइट के नीचे अपना होमवर्क किया करता।

एक बार बालक विलिंगटन ने किसी कारणवश अपना होमवर्क नहीं किया तो अध्यापक ने उसके दोनों हाथों में बेंत से डंडे मारे। वह रोने लगा तो अध्यापक ने उसे चुप करने के उद्देश्य से पूछा– 'क्यों विलिंगटन! यह टाइमपीस क्या कहती है?'

अबोध विलिंगटन ने उत्तर दिया– 'क्लॉक सेज टन टन टन एंड विलिंगटन वुड बी दी लार्ड ऑफ लंदन' (घड़ी कहती है, टन टन टन और लंदन का लार्ड बनेगा विलिंगटन)।

यह सुनते ही क्लास के अन्य छात्र जोर-जोर से हँसने लगे और उसे 'लंदन लार्ड' के नाम से चिढ़ाने लगे।

लेकिन बालक विलिंगटन की यह भविष्यवाणी सौ फीसदी सत्य साबित हुई और वह एक दिन सचमुच 'लंदन का लार्ड' बना। आगे चलकर लार्ड विलिंगटन ने राष्ट्रहित में कई नेक कार्य किये, जिनके कारण वे आज भी संसार में अमर हैं।

जानकारी लेख : ईलू रानी

मीठी-मीठी चॉकलेट की अनोखी बात

दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका के गर्म एवं सघन जंगलों में 'चाखोलटक' प्रजाति के पेड़ पाए जाते हैं। इन पेड़ों में छः माह तक फूल खिलते हैं और फूलों से बड़ी-बड़ी फलियां बनती हैं। इन फलियों में कई बीज रहते हैं। भीषण गर्मियों में ये दाने पक जाते हैं। तब फलियों को तोड़कर दानों को सलीके से निकाला जाता है। इन दानों को आधुनिक फैक्ट्रियों में पहुँचाया जाता है, जहाँ बड़े-बड़े ओवन में इन्हें पकाया जाता है। इसके बाद इन्हें अच्छी तरह घोंटकर एक गाढ़े द्रव्य में बदल दिया जाता है। इस द्रव्य को मीठा बनाने के लिए इसमें स्वाद के लिए चीनी और पौष्टिकता के लिए भैंसों का दूध मिलाया जाता है। हाँ, इस मिश्रण से ही फैक्टरी में चॉकलेटों का निर्माण होता है।

चॉकलेट के जायके का सर्वप्रथम पता लगाने का श्रेय मैक्सिको के वैज्ञानिक सर डिआई को है। इन्होंने 6 जुलाई, 1807 को मैक्सिको के घने जंगल 'द रियार्ड' में 'चाखोलटक' प्रजाति के पेड़ों की खोज की थी तथा पेड़ की फलियों के दानों का परीक्षण 7 वर्षों तक किया था। पहले पहल उन्होंने अपने स्तर पर ही इन फलियो के दानों से चॉकलेट बनाने की कोशिश की थी। चॉकलेट बन तो जरूर गई थी, लेकिन उसमें मिठास की कमी रह गई थी।

कुछ वर्षों बाद यानी 26 जुलाई, 1813 को अमेरिका के वैज्ञानिक 'टारआन' ने इन फलियों के दानों को एक गाढ़े, कड़वे और झागदार पेय में बदला व उसे 'चाखोलटक' नाम दिया। बाद में इस 'चाखोलटक' को चीनी और फल का जूस मिलाकर मीठा बनाया गया।

दो बाल कविताएं : महेन्द्र सिंह शेखावत

नये वर्ष का स्वागत

नये वर्ष का करें सभी हम,
मिलकर सारे ऐसा स्वागत।
भूलें सारे वैर भाव हम,
मन में हो प्रीत की चाहत।।

नहीं किसी का बुरा करें हम,
सीखें मानवता से रहना।
सच्ची-मीठी वाणी बोलें,
कटुवचन न कभी कहना।।

नये-नये संकल्प करें हम,
अब है आगे हमको बढ़ना।
भूखे-प्यासे दीन-दुखी की,
आगे बढ़ कर सेवा करना।।

सबके लिए हो मंगलमय इस,
नये वर्ष का इक-इक पल।
भविष्य स्वर्णिम और सुखद हो,
सबके लिए हो उज्ज्वल कल।।

आई सर्दी

ठिठुरन लेकर आती सर्दी,
सूरज को थर्राती सर्दी।
काँप रहे हैं दादा-दादी,
सबके दांत बजाती सर्दी।

कम्बल, मफलर और रजाई,
सर्दी ने है धूम मचाई।
गर्म-गर्म सब मांगे चाय,
गर्म पकोड़े सर्दी लाई।

घर-घर में अब जाकर देखो,
सब पर रोब जमाती सर्दी।
बच्चे-बूढ़े सबकी मुश्किल,
सबको खूब सताती सर्दी।

मन करता ना बिस्तर छोड़े,
गहरी नींद सुलाती सर्दी।
कोहरा-धुंध से ढके खेत वन,
लम्बी रातें लाई सर्दी।

कहानी : नीरज कश्यप

बस! एक मिनट

आलोक जैसे ही स्कूल से घर आया उसने बैग उतारकर पास रखे सोफे पर फेंक दिया, उसने तुरन्त टी.वी. का रिमोट लिया और टी.वी.देखने लगा। इतने में ही उसकी मम्मी अन्दर आयी और उन्होंने आलोक को हिदायत दी कि पहले फ्रैश हो जाओ फिर कुछ खा लो। ये सब बाद में देखना। पर आलोक पर कोई असर नहीं हुआ। मम्मी ने दोबारा कहा तो आलोक की तरफ से एक ही जवाब आया– 'बस एक मिनट मम्मी।'

आलोक के लिए यह कोई नई कहानी नहीं थी। उसका रोज यही काम था। उससे कोई भी किसी काम के लिए कहता तो जवाब में वह बस यही बोलता। 'बस एक मिनट।' यह बोलकर वह अपने काम में लग जाता। उसकी इस 'बस एक मिनट' की बीमारी से न केवल उसके परिवार के अपितु उसके दोस्त, उसकी टीचर भी दु:खी थे।

घर में सिर्फ आलोक की दादी थी। जिनके पास काफी समय था। वो भी आलोक की इन हरकतों से अनभिज्ञ नहीं थी। अत: दादी को डर था कि इस तरह से तो यह लड़का न तो कुछ सीख पायेगा और न ही ठीक से पढ़ सकेगा बल्कि दिनभर खेलने और टी.वी. देखने से तो यह बुरी संगत में पड़ जायेगा। अत: दादी ने ठान लिया कि कुछ हो न हो पर वो आलोक को सुधारने की पूरी कोशिश करेगी।

उसी शाम दादी ने घर के सभी सदस्यों को एक तरकीब बताई जिससे आलोक सुधर सकता था। अगले दिन आलोक को किसी ने नहीं जगाया। जब वह जागा, उसने घड़ी को देखा, आज वह बहुत देरी से उठा था। वह जल्दी-जल्दी स्कूल के लिए तैयार होने लगा। तभी उसकी स्कूल बस आ गयी।

आलोक बोला– मम्मी जल्दी टिफिन दो, बस आ गयी है।

मम्मी ने कहा– 'बस एक मिनट।'

यह सुनकर आलोक थोड़ा हैरान हुआ पर बस के हॉर्न ने उसे रूकने नहीं दिया और उसे बिना टिफिन के ही स्कूल जाना पड़ा।

स्कूल में जब शिक्षक ने होमवर्क देखा तो आलोक का अधूरा होमवर्क देखकर शिक्षक ने आलोक को डांटा। कुछ समय बाद 'लंच ब्रेक' हुआ पर वह तो लंच भी नहीं लाया था। जैसे-जैसे स्कूल से छुट्टी के बाद आलोक घर पहुँचा, उसका भूख से बुरा हाल था। आज तो उसने बैग रखा और खेलने के लिए जाने के बजाय खाना मांगा। मम्मी ने खाना दे दिया। शाम को टी.वी. देखते हुए पापा से जब आलोक ने रिमोट मांगा तो पापा ने कहा– 'बस एक मिनट।'

आलोक फिर हैरान हुआ और जाकर सो गया। अब आलोक अगर किसी से कुछ कहता तो उसे बस एक ही जवाब मिलता– 'बस एक मिनट।'

जैसे-तैसे करके शनिवार आया और रात को पापा ने बताया कि संडे को हम सब पिकनिक पर चलेंगे। आलोक की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह जल्दी से जाकर सो गया। अगली सुबह सब पिकनिक गये। आलोक के कहने से पापा 'डिजनी पार्क' भी गये। वहाँ जाकर आलोक ने स्वीमिंग के लिए कहा– पापा ने हाँ कह दी।

जैसे-जैसे वह पानी में जाता, पानी गहरा होता जाता, उसने तभी पापा को आवाजा दी– पापा पानी गहरा है। मुझे निकालिए।

पापा बोले– 'बस एक मिनट।'

पानी आलोक के नाक तक आ गया। वह चिल्लाया– 'पापा बचाओ।'

पापा बोले– 'बस एक मिनट।'

इतने में आलोक पूरी तरह पानी में डूब गया और ...

और इतने में एक झटके से वह सोता हुआ जाग गया। उसने देखा परिवार के सभी सदस्य वहाँ खड़े हुए हैं। दादी ने उसके सिर पर हाथ फेरा और पूछा– आलोक तुम बचाओ-बचाओ क्यों चिल्ला रहे थे?

इतना सुनते ही आलोक की आँखों में आंसू आ गये और बोला– दादी मुझे माफ कर दो। मैंने काम टालने के चक्कर में सभी को बहुत परेशान किया है। अब मैं किसी से भी एक मिनट के लिए नहीं कहूंगा क्योंकि बहुत से काम जरूरी होते हैं जो कभी नहीं टालने चाहिएं।

दादी मुस्कुराकर बोली– जो बच्चे काम को टालते हैं और नहीं करते वे आगे चलकर आलसी और कामचोर हो जाते हैं इसलिए उन्हें कोई प्यार नहीं करता तथा सभी उन्हें घृणा की नजरों से देखते हैं।

दादी की सभी बातें आलोक की समझ में आ गईं।

सभी खुशी-खुशी पिकनिक के लिए रवाना हुए।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

नहीं किट्टी। तुम मोबाइल लेकर नहीं जाओगी। तुम वहाँ गुम कर दोगी। ये बहुत महंगा मोबाइल है।
नहीं मम्मी, ऐसा कुछ भी नहीं होगा। मैं मोबाइल लेकर जाऊँगी, बस।
माँ ने सोचा- 'भेज देती हूँ, देखा जायेगा।' यह सोच कर माँ ने किट्टी को मोबाइल दे दिया।

किट्टी जब पंचगणी में अपनी सहेलियों के साथ घूम रही थी, तब उसने बन्दर देखे और उनकी अपने मोबाइल से फोटो खींचने लगी।
तभी एक बन्दर वहाँ आया और किट्टी पर झपटते हुए उससे मोबाइल छीन कर भाग गया।
किट्टी गिर गई थी। उसे काफी चोट आई थी। वह रोने लगी। तभी उसे माँ की कही हुई बात याद आई।

जब वह घर पहुँची और माँ को इस बात का पता चला तो माँ ने उसे गले से लगा लिया और बोली–
किट्टी, मोबाइल खो गया, कोई बात नहीं पर जो तुम्हें चोट लगी उससे तुम्हें दर्द हुआ होगा बेटी। बड़े-बुजुर्ग जब कोई बात कहते हैं तो उसे मानना चाहिए।
किट्टी ने सुबकते हुए कहा– हाँ मम्मी, आप ठीक कह रही थीं। हमें बड़ों की बात माननी चाहिए। वे हमारे भले के लिए ही कहते हैं। आगे से मैं कभी भी आपकी और टीचर्स की बात नहीं टालूँगी।

– संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ गर्म लोहे पर ठंडा हथौड़ा ही काम कर सकता है। इसी तरह क्रोध को नम्रता से ही खत्म किया जा सकता है। **– सरदार पटेल**

★ उस काम को जिसे तुम दूसरे व्यक्ति में बुरा समझते हो, स्वयं त्याग दो परन्तु दूसरों पर दोष मत लगाओ। **– रामतीर्थ**

★ मैं असफल नहीं हुआ हूँ बल्कि मैंने ऐसे तरीके खोज निकाले जो काम नहीं करते हैं। **– थॉमस ए. एडिसन**

★ अगर आप अपने जीवन से प्यार करते हैं तो वक्त मत बर्बाद करें क्योंकि वह वक्त ही है जिससे जीवन बना होता है। **– ब्रूस ली**

★ शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। **– चाणक्य**

★ संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है। **– स्वामी शिवानंद**

★ एक कामयाब आदमी वह होता है जो उन ईंटों के साथ एक पक्की नींव बना सकता है जिन्हें अन्य ने उस पर फेंकी है।

★ सफल होने के लिए जरूरी है कि सफलता की इच्छा नाकाम रहने के डर से बड़ी हो।

★ आपको उतने ही नतीजे मिलते हैं जितने आप प्रयास करते हैं। ज्यादा नतीजों के लिए प्रयास भी बढ़ाने होंगे। **– अज्ञात**

★ यदि एक बड़ा कदम उठाने की आवश्यकता है तो डरे नहीं। आप गहरी खाई को दो छलांग लगाकर पार नहीं कर सकते। **–डेविड लॉयड जॉज**

★ पराधीनता समाज के समस्त मौलिक नियमों के विरुद्ध है। **– मॉन्टेस्क्यू**

★ अकेले फूल को कई कांटों से ईर्ष्या करने की जरूरत नहीं होती। **– रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

★ उचित अवसर के अभाव में योग्यता का मूल्य बहुत कम रह जाता है। **– नेपोलियन**

★ मानव जीवन बचाना सबसे बड़ा धर्म है। **– वड्सवर्थ**

★ सिर्फ विश्वास हमारा ऐसा सम्बल है, जो मंजिल तक पहुँचाता है। **– स्वेट मार्डेन**

★ अपने को जो अच्छा न लगे, वैसा आचरण दूसरे के साथ भी नहीं करना चाहिये। **– महाभारत**

★ संकट के समय धैर्य, अभ्युदय के समय सब सहन करने की सामर्थ्य सभा में अच्छा बोलना और युद्ध में वीरता शोभा देती है। **–भतृहरि**

★ प्रेम, सच्चाई और जो उचित है, वह करने की हिम्मत इस जीवन की यात्रा में हमारे मार्गदर्शक होने चाहिए। **– कॉरेटा स्कॉटकिंग**

★ दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, उसे बदलना है। **– सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

★ जुगनू तभी तक चमकता है जब तक उड़ता है यही हाल मन का है। जब हम रूक जाते हैं तो अंधकार में डूब जाते हैं। **– वेली**

★ अगर आदमी परोपकारी नहीं है तो उसमें और दीवार पर बने चित्र में क्या फर्क है। **– शेखसादी**

कविता : शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी

नववर्ष आया है ...

बीत गया वर्ष पुराना,
नया वर्ष अब आया है।
लाया है इक नई उमंग,
जादू-सा दिल में छाया है।।

नये समय में नई सोच में,
पूरे होंगे सारे सपने।
नये दिन के साथ-साथ में,
नये-नये गुण भर ले।।

शील औ,
आदर्श का नव वरण कर ले।
बीते को बिसार दे भाई,
मंजिल अपनी को तय कर ले।।

दूर भगा निराशा भाव को,
आशा दीप जलाने आया।
नव किरण का गीत सुना,
ये दूर कर देता कुहासा।।

ढूंढ ले खिलती सुबह में,
कुछ पुराना कुछ नया-सा।
नववर्ष झूमता आया,
नववर्ष चहकता आया।।

नयी उमंगें नयी तरंगें,
उत्साह घनेरा लाया।

जानकारीपूर्ण आलेख : किरण बाला

सबसे बड़ा विमान

वैसे तो दुनिया में एक से बढ़कर एक विमान हैं लेकिन क्या आप सबसे बड़े विमान के बारे में जानते हैं?

अंतरिक्ष विज्ञान और विमानन की दुनिया में नई उपलब्धि हासिल हुई है। अमेरिकी कम्पनी स्ट्रेटोलांच सिस्टम्स कॉर्प द्वारा निर्मित दुनिया के सबसे बड़े विमान रॉक ने कैलिफोर्निया के मोजेव डेजर्ट के ऊपर पहली उड़ान भरी।

मोजेव एयर एंड स्पेस पोर्ट से विमान ने स्थानीय समयानुसार 13 अप्रैल, 2019, शनिवार को सुबह सात बजे उड़ान भरी। सैंकड़ों लोगों की उत्साहित भीड़ के समक्ष इस विमान ने ढाई घंटे की सफल उड़ान के बाद सुरक्षित लैंडिंग की। उड़ान के दौरान इसकी अधिकतम गति 189 मील (करीब 304 किलोमीटर) प्रति घंटा और अधिकतम ऊँचाई 17000 फीट (5182 मीटर) रही। स्ट्रेटोलांच के सीईओ जीन फ्लॉयड ने इसे शानदार उड़ान बताया।

यह विशाल विमान हवा में रहकर रॉकेट छोड़ने में सक्षम है। इसकी मदद से बिना लांचपेड के ही सेटेलाइट को अंतरिक्ष में भेजना सम्भव हो सकेगा। स्ट्रेटोलांच की स्थापना माइक्रोसाफ्ट के सह-संस्थापक पॉल एलेन ने की थी। रॉक नाम के इस विशाल सफेद विमान का विंग स्पेन (डैनों का फैलाव) 117 मीटर है, जो फुटबाल मैदान की लम्बाई के लगभग बराबर है। दो बॉडी (ट्विन फ्यूजलेज) वाले इस विमान में छह बोइंग 747 इंजन लगे हैं।

विमान इतना बड़ा है कि इसके पंख का फैलाव एक अमेरिकी फुटबाल मैदान से भी ज्यादा है। विमान को सेटेलाइट के लांच पेड के रूप में तैयार किया गया है। पंख के नीचे तीन सेटेलाइट के साथ रॉकेट की जगह है जिसके जरिए 35000 फुट की ऊँचाई से उपग्रह का प्रक्षेपण होगा। विमान का उद्देश्य अंतरिक्ष में सेटेलाइट छोड़ने से पहले 10 किमी. तक उड़ना है। इससे अंतरिक्ष में किसी चीज को भेजना रॉकेट से भेजने से ज्यादा सस्ता हो जाएगा। स्ट्रेटोलांच के अनुसार, हमारा उद्देश्य अंतरिक्ष की कक्षा में जाना है। विमान को अपने विशाल विंग के केन्द्र के तहत तीन उपग्रह से भरे रॉकेट के रूप में ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है।

रॉक की सफल उड़ान से अंतरिक्ष विज्ञान में नई क्रांति की उम्मीद जगी है। विमान इस तरह से तैयार किया गया है कि यह हवा में ले जाकर रॉकेट छोड़ सकता है। इसकी क्षमता 2.27 लाख कि.ग्रा. वजन तक के रॉकेट व सेटेलाइट को 35000 फीट की ऊँचाई पर जाकर छोड़ने की है।

यह प्लेन सेटेलाइट को अंतरिक्ष में उनकी कक्षा तक पहुँचाने में मदद करेगा। मौजूदा समय में टेकऑफ रॉकेट की मदद से उपग्रहों को भेजा जाता है। रॉक विमान की सफलता के बाद उपग्रहों को कक्षा तक पहुँचाने के लिए प्लेन बेहतर विकल्प होगा तथा उपग्रह छोड़ने का खर्च भी कम हो जाएगा।

नासा में विज्ञान मिशन निदेशालय के एडमिनिस्ट्रेटर थॉमस जुर्बुचेन के अनुसार, इस प्लेन का उड़ान भरना स्ट्रेटोलांच टीम के लिए यह मील का पत्थर है। यह अंतरिक्ष के छोर और उससे भी परे जाने से जुड़ा है।

कहानी : बलतेज कोमल

स्वतन्त्रता सभी को प्रिय

समीर बेहद शरारती बच्चा था। शरारती होने के साथ–साथ उसमें एक खराब आदत यह भी थी कि वह बेकसूर पक्षियों को अकारण ही दुःख देता था। समीर के पापा एक लेखक थे वह पक्षियों से बहुत स्नेह करते थे। उन्होंने पक्षियों के रहन–सहन पर एक पुस्तक भी लिखी थी।

समीर के पापा ने, समीर को कई बार समझाया कि देखो समीर बेटा, ''तुम इन पक्षियों को आकरण ही परेशान न किया करो। इन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम हाथ धोकर इनके पीछे पड़े रहते हो?''

लेकिन समीर अपने पिता की दी हुई नसीहत पर बिल्कुल अमल न करता। वह अक्सर पक्षियों को फंसाने के नये–नये तरीके सोचता रहता। कई बार वह अपने घर की सभी खिड़कियां व दरवाजे बन्द करके चिड़िया को पकड़ता और उन्हें अपने पिंजरे में बंदी बनाकर उनका तमाशा देखता रहता। वह कभी उनके आगे रोटी का टुकड़ा रखता और कभी उनके आगे पानी की कटोरी रखता। लेकिन कैद हुई चिड़िया न कुछ खाती और न कुछ पीती। वह भूखी और प्यासी ही समीर के पिंजरे में दम तोड़ देती। अगले दिन समीर फिर कोई दूसरा पक्षी पकड़ता और उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करता। एक दिन उसने फाख्ता के घोंसले से उसके दो मासूम बच्चों को पकड़ लिया। आदत के अनुसार उन्हें पिंजरे में बंद करके वह बहुत प्रसन्न हुआ।

कुछ देर बाद जब फाख्ता अपने बच्चों के लिए भोजन लेकर आई तो अपने दोनों बच्चों को घोंसले में न पाकर बहुत घबरा गयी। उसने इधर–उधर बच्चों को ढूंढने के लिए देखा। जल्दी ही उसे अपने बच्चे समीर के पिंजरे में नजर आ गये। वह चिंतित हो उठी और आँखों में आंसू भरकर जोर–जोर से शोर मचाने लगी।

फाख्ता की चीख–चिल्लाहट सुनकर वहाँ बहुत सारे पक्षी, तोते, कबूतर, मैना व कौए आदि आ पहुँचे। सभी ने इकट्ठे होकर बच्चों को बंधन–मुक्त कराने की चेष्टा की। मगर सभी पक्षी बेबस रहे क्योंकि समीर के हाथ में डंडा था। अपने आंगन में इतने पक्षी देखकर वह अपने आपको 'तीस मार खां' समझ रहा था। समीर को भूख ने सताया तो वह भोजन खाने के लिए अन्दर गया। उसने पिंजरा भी उठाकर अन्दर

रख दिया था। सारे पक्षी चले गये थे। अब सिर्फ वहाँ बच्चों की माँ ही अकेली थी। वह लगातार रो रही थी। शायद उसे अब भी आशा थी कि वह लड़का उसके बच्चों को आजाद कर देगा।

समीर के भोजन करते–करते उसका प्रिय मित्र व सहपाठी अमितोज, समीर के पास आया। दो मासूम पक्षियों को पिंजरे में बन्द देखकर वह बहुत दुःखी हुआ। समीर की ऐसी घटिया हरकत पर अमितोज को बड़ी पीड़ा हुई। उसने समीर से कहा, ''तुम बहुत जालिम व अत्याचारी हो। इन पक्षियों ने तेरा क्या बिगाड़ा है जो इनको बन्दी बनाकर रखा है?''

''मैं अत्याचारी कब हूँ? मैं तो इन्हें दाना–पानी भी देता हूँ। अगर यह कुछ खाते–पीते नहीं तो इसमें मेरा क्या दोष है? तुम्हें मुझ पर एतबार नहीं तो खुद देख सकते हो।'' इतना कहकर समीर पिंजरा लेकर बाहर आ गया।

अमितोज, समीर की मूर्खता भाप चुका था। उसने सोचा– अगर समीर को गुस्से से समझाया तो शायद वह ना माने। चलो इसे प्यार से ही समझा कर देखते हैं।

उसने समीर से बड़े प्यार से कहा, ''देखो समीर! जिस तरह इन बच्चों की माँ, अपने बच्चों की जुदाई में व्याकुल हो रही है, ईश्वर न करे, कल तुम्हें भी कोई उठाईगीर उठाकर ले जाये तो तुम्हारी माँ पर क्या बीतेगी? क्या अपनी माँ के बिना तुम खाना खा सकोगे? वह भी जालिम व अत्याचारी लोगों की कैद में।

–देखो मित्र, हर पक्षी आज़ाद रहना चाहता है। जिस तरह हम आज़ाद हैं। अगर तुम्हें पक्षियों से खेलने का ही शौक़ है तो तुम छत पर इनके लिए दाना और किसी मिट्टी के बर्तन में पानी रख सकते हो। फिर देखना, पक्षियों की आमद से तुम्हारा घर–आंगन कितना सुन्दर हो जायेगा।'' अमितोज की इन बातों का समीर के दिल पर गहरा असर हुआ।

उसे मानना पड़ा कि वह जरूर परिन्दों पर जुल्म ढाता रहा है। उसने फिर उसी क्षण फाख्ता के दोनों बच्चों को आजाद कर दिया। वे आज़ाद होकर अपनी जननी के पास पहुँच गये थे।

समीर ने अपना पिंजरा भी तोड़ कर फेंक दिया था।

• • •

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

तिरंगा फहराया

हर शहर गाँव गली।
वीरों की टोली चली।
गणतंत्र दिवस आया,
राष्ट्र भक्ति लगे भली।

तिरंगा फहराया।
गगन में लहराया।
ऊँचा हुआ मस्तक,
देश प्रेम भाया।

देश से प्यार करें।
सबका सत्कार करें।
फैले यश दुनिया में,
ऐसा व्यवहार करें।

पढ़ेंगे हम बढ़ेंगे हम

पढ़ेंगे हम बढ़ें हम।
पीछे नहीं रहेंगे हम।

सुबह उठेंगे पाठ पढ़ेंगे।
विद्यालय का काम करेंगे।
आलस नहीं करेंगे हम।
पीछे नहीं रहेंगे हम।

देर रात तक लिखें पढ़ेंगे।
ध्यान लगाकर याद करेंगे।
समय न व्यर्थ करेंगे हम।
पीछे नहीं रहेंगे हम।

शिक्षक का सम्मान करेंगे।
किसी का न अपमान करेंगे।
गलती नहीं करेंगे हम।
पीछे नहीं रहेंगे हम।

हर अच्छाई आयेगी।
दूर बुराई जायेगी।
सच्चाई पर चलेंगे हम।
पीछे नहीं रहेंगे हम।

पढ़ो और हँसो

अमित : यार सुमित पिछले हफ्ते पैदा हुआ तुम्हारा भाई इतना रोता क्यों है?

सुमित : अगर तुम्हारे एक भी दांत न हो, सिर गंजा हो, तुम्हारे पैर इतने छोटे और कमजोर हो कि तुम खड़े भी न हो पाओ। उस पर तुम कुछ भी न कह सकते हो तो मेरे ख्याल से तुम्हें भी उसकी तरह रोना आएगा।

एक चिड़ियाघर में एक बच्चा हाथी के पास खड़ा था।

पापा : बेटे हाथी से दूर हो जाओ।

बेटा : पापा आप चिन्ता मत करो मैं हाथी का कुछ नहीं बिगाड़ूंगा।– **विशाल खुराना (भरतपुर)**

एक बन्दर पेड़ पर चढ़ा तो ऊपर बैठे लंगूर ने कहा– तू क्यों चढ़ा?

बन्दर : सेब खाने के लिए चढ़ा।

लंगूर : पर यह तो आम का पेड़ है।

बन्दर : मुझे पता है। सेब तो मैं साथ लाया हूँ।

पिताजी : बेटा, तुम्हें परीक्षा में कितने अंक मिले हैं?

बेटा : भैया से बीस कम।

पिताजी : भैया को कितने मिले हैं?

बेटा : बीस। – **राधा नाचीज़ (नई दिल्ली)**

मारपीट में पकड़े गये एक व्यक्ति को थानेदार ने डांटते हुए कहा– कसम खाओ कि आज के बाद तुम किसी के भी बाल नहीं छुओगे?

पकड़ा गया व्यक्ति बोला– यह कसम मैं नहीं खा सकता। इस कसम के अलावा कोई भी कसम खा सकता हूँ।

थानेदार : क्यों?

व्यक्ति : हुजूर मेरा नाई का पेशा है।

– **नीरज राठौर (सोनीपत)**

थानेदार : जब तुम्हारी मोटर साइकिल चोरी हुई उसी समय तुमने रिपोर्ट क्यों नहीं लिखवाई?

व्यक्ति : हुजूर, मैंने सोचा कि चोर मोटर साइकिल की मरम्मत करवा ले तभी रिपोर्ट लिखवाऊं।

एक छोटे बच्चे ने अपने पिता के गले में चौड़ी-सी टाई बंधी देखी तो उसने पूछा– पिताजी यह क्या है?

पिता बिना कोई उत्तर दिये हँस पड़े।

बच्चा : मैं समझ गया। माँ ने नाक पोंछने के लिए 'हैन्की' बाँधा है।

– **गुरचरण आनन्द (लुधियाना)**

मोहन : अब तो लोग चन्द्रमा पर पहुँच जाएंगे।

नीतू : फिर तो बहुत गड़बड़ हो जाएगी। वे अपना सारा कूड़ा हम लोगों पर फेंका करेंगे।

एक भोला-भाला देहाती आदमी पहली बार सिनेमा देखने गया। वहाँ पर जब पिक्चर प्रारम्भ हुई तो सब बत्तियां बुझा दी गईं। वह आदमी दौड़ा-दौड़ा मैनेजर के पास गया और बोला– क्या हम उल्लू हैं जो अंधेरे में सिनेमा देखेंगे?

डॉक्टर : (मरीज से) परेशान होने वाली कोई बात नहीं है। आपको ज्यादा से ज्यादा घर से बाहर रहना चाहिए। वैसे आप काम क्या करते हैं?

मरीज : जी, मैं फेरी लगाकर सामान बेचता हूँ।

ग्राहक : आज स्पेशल सब्जी में क्या है?

वेटर : अंगूर विद लौकी।

ग्राहक : (सब्जी खाने के बाद) इसमें अंगूर का स्वाद तो है ही नहीं।

वेटर : पर हमने दोनों बराबर मात्रा में डाले थे।

ग्राहक : किस हिसाब से?

वेटर : पाँच लौकी और पाँच अंगूर।

– दीपक आर. कुकरेजा (वडसा)

एक बार एक हाथी का एक्सीडेंट हो गया। इसलिए उसे खून की आवश्यकता थी। यह खबर सुन एक चिंटी दौड़ी-दौड़ी आई और बोली– आप मेरा खून ले लीजिए।

एक बार एक हाथी घूमने निकला। उसे रास्ते में चींटी मिल गई। चींटी ने कहा– मेरे साथ खेलोगे?

हाथी : अगर मम्मी ने देख लिया तो बहुत मारेगी।

चींटी : चिन्ता की कोई बात नहीं। अगर तुम्हारी मम्मी आ गई तो तुम मेरे पीछे छुप जाना।

अंग्रेजी के अध्यापक ने कक्षा में छात्रों से पूछा– बच्चों, मैं बस स्टैण्ड नहीं पहुँच सका क्योंकि मेरी कार खराब हो गई थी। इसकी अंग्रेजी बनाओ।

एक छात्र : (जो पढ़ने में नालायक तथा बातूनी था) सर, आप रिक्शा पकड़ लेते। इसकी अंग्रेजी क्यों बनवा रहे हैं?

एक दोस्त दूसरे से– तुम बहुत अच्छी स्विमिंग कर लेते हो कहाँ सीखी?

दूसरा दोस्त : पानी में।

– पूजा संगतानी (बालोतरा)

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

कोयल और कौआ

आसपास दो पेड़ थे। एक, आम का और दूसरा नीम का। आम के पेड़ पर कोयल रहती थी और नीम के पेड़ पर कौआ का बसेरा था। मजे में दोनों की जिन्दगी गुजर रही थी।

बसन्त ऋतु आई। कोयल सुबह-सुबह सुरीली आवाज में गीत गाने लगी– कूहू... कूहू...

सम्पूर्ण वातावरण में कोयल की मधुर आवाज गूंज उठी।

गीत गाकर जब कोयल थक गयी तो उसने गाना बंद कर दिया। उसकी निगाह कौआ पर जा पड़ी। वह नीम के पेड़ पर उठास बैठा था।

कोयल ने पूछा– 'कौआ भाई, कोई कष्ट है क्या?'

'नहीं तो!' कौआ हड़बड़ाकर बोला।

'बहुत उदास हो।'

'हाँ'

'क्यों?' कोयल ने पूछा, 'क्या तुम्हें मेरा गाना अच्छा नहीं लगा?'

'ऐसी बात नहीं है।'

'फिर क्या है?'

'देखो न, तुम भी काली हो, मैं भी काला हूँ; मगर...' कहते-कहते कौआ रूक गया।

'मगर क्या?' कोयल ने कुरेदा।

'तुम्हारी आवाज जितनी मीठी है, उतनी ही कर्कश है मेरी आवाज। इसी वजह से मैं उदास हूँ' कौआ आगे बोला– 'हर कोई तुम्हारी आवाज की सराहना करता है और मेरी आवाज की निन्दा। सच तो यह है कि भगवान ने मेरे साथ खूब अन्याय किया है।'

'तुम्हारा ऐसा सोचना उचित नहीं है।' कोयल तपाक से बोली।

'क्यों नहीं है?' कौआ ने जिरह की।

'भगवान ने जो कुछ किया है, बिल्कुल ठीक है।'

'वह किस तरह?'

'भगवान ने तुम्हें भी तो एक खूबी दी है। कभी उस ओर तुम्हारा ध्यान गया है?'

'क्या खूबी दी है?' कौआ चौंका।

'तुम्हारी चेष्टा जिस काम के लिए होती है कभी विफल नहीं जाती। सभी तुम्हारे इस गुण की कद्र भी करते हैं। मुझमें तो वह गुण नहीं है। फिर मैं भी भगवान को अन्यायी कह सकती हूँ, मगर नहीं।' कोयल ने अपनी बात पूरी करते हुए आगे कहा, 'मैं जानती हूँ, भगवान ने हमें जो कुछ दिया है, खूब सोच-विचार कर दिया है। उसमें कोई त्रुटि ढूंढना हमारी मूर्खता है।'

पहली बार कौआ को अपनी खूबी की जानकारी हुई। कोयल का तर्क भी उसे अब अच्छा जान पड़ा। उसकी उदासी दूर हो गई। वह बोला– कोयल बहन, तुम ठीक कहती हो। मैंने व्यर्थ ही भगवान को बुरा-भला कहा। मैं जो भी हूँ, जैसा भी हूँ, अपनी जगह पर ठीक हूँ। भगवान ने मुझे अपने ढंग का और तुम्हें अपनी तरह का बनाया है। दोनों अपनी-अपनी जगह पर ठीक हैं। है न ऐसा?

'बिल्कुल', कोयल मुस्करा पड़ी।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

नूतन-वर्ष

नई उमंगें संग लाया
नूतन-वर्ष फिर आया।

बीत गया सो बीत गया
करें आज का अभिनंदन,
नये झरोखे खोलें हम
नव-भोर का करें वंदन।

उन्नति का पैगाम लाया
नूतन-वर्ष फिर आया।
उठे कदम हटें न पीछे
ऐसा संकल्प हमारा।

ऊँच-नीच का भेद मिटे
अब दूर भागे अंधियारा।
खुशियों का खजाना लाया
नूतन-वर्ष फिर आया।

अनपढ़ता का शाप मिटे
रहे न कोई दीन-दुखी,
गुरुजनों का आदर हो
हर आंगन में बसे खुशी।

नई चेतना साथ लाया
नूतन-वर्ष फिर आया।

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

नया साल

साल पुराना चला,
कहता हुआ अलविदा।
दो हजार बीस आया,
नयापन है जुदा।

साल समय के साथ,
समझो चला गया।
साल नया उपलब्धियां,
लेकर आये नया।

प्रण करते हैं अब,
कोई नया काम करेंगे।
अपने हित में सदा,
अपने परिणाम करेंगे।

नवम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. निशिका मनवानी — 10 वर्ष
44, ग्रीन पार्क सोसाइटी,
अंकलेश्वर महादेव रोड, गोधरा (गुजरात)

2. सेफाली गौतम — 14 वर्ष
ग्राम : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

3. सुमति वर्मा — 12 वर्ष
210, टाइप-2, केन्द्रांचल कालोनी,
गुलमोहर विहार, नौबस्ता, कानपुर (उ.प्र.)

4. प्रतिभा यादव — 13 वर्ष
म. नं. 160/12, गली नं. 5,
कृष्णा कालोनी, गुरुग्राम (हरियाणा)

5. मयंक चन्द्र — 11 वर्ष
ग्राम : मुझोली, पोस्ट : गोलूछीना,
जिला : अल्मोड़ा (उत्तराखंड) दिल्ली)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं—

खुशी वधवा (अशोक विहार कालोनी, नकोदर), अर्नव (सुजानपुर टीरा), सौम्या (धनपुरी), स्वास्तिका (पवन नगर, सिडको), क्षितिज (फरीदाबाद), प्रगति (रविग्राम, रायपुर), सुरीली (बसंत सिटी, लुधियाना), विभोर (लक्खी कालोनी, बरनाला), दिव्यांशी (राधा धाम कालोनी, भरतपुर), प्रथमेश (निजामपुर, रायगढ़), मन्नत (मालनू, कांगड़ा), ऋद्धि (राजनगर, नई दिल्ली), आरव (सिंधी कालोनी, पाली), नितिका (मनीमाजरा), मयंक, विधिता, खुशी, ज्ञानवीर, प्रकृति, मीत, कनिका, प्रीतिका, कृष, शांति, झनक, रेशमा, संजना, संदीप, सिमरन, रवीश, कुनाल, वंशिका, आशीष, राकेश, अनीशा, स्वीटी (रायपुर), चिराग, नकुल, लक्ष, भूमि लालवानी, देवांग, अभय, परी, आयुषी, भूमि जनवानी, भाविका, कुश खिनानी, मुस्कान, हार्दिक, जय, आरती, सुमित, कुश, भावेश, मोहित, शिव, लहर, डिम्पल, ध्रुव (गोधरा)।

जनवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 जनवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मार्च अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

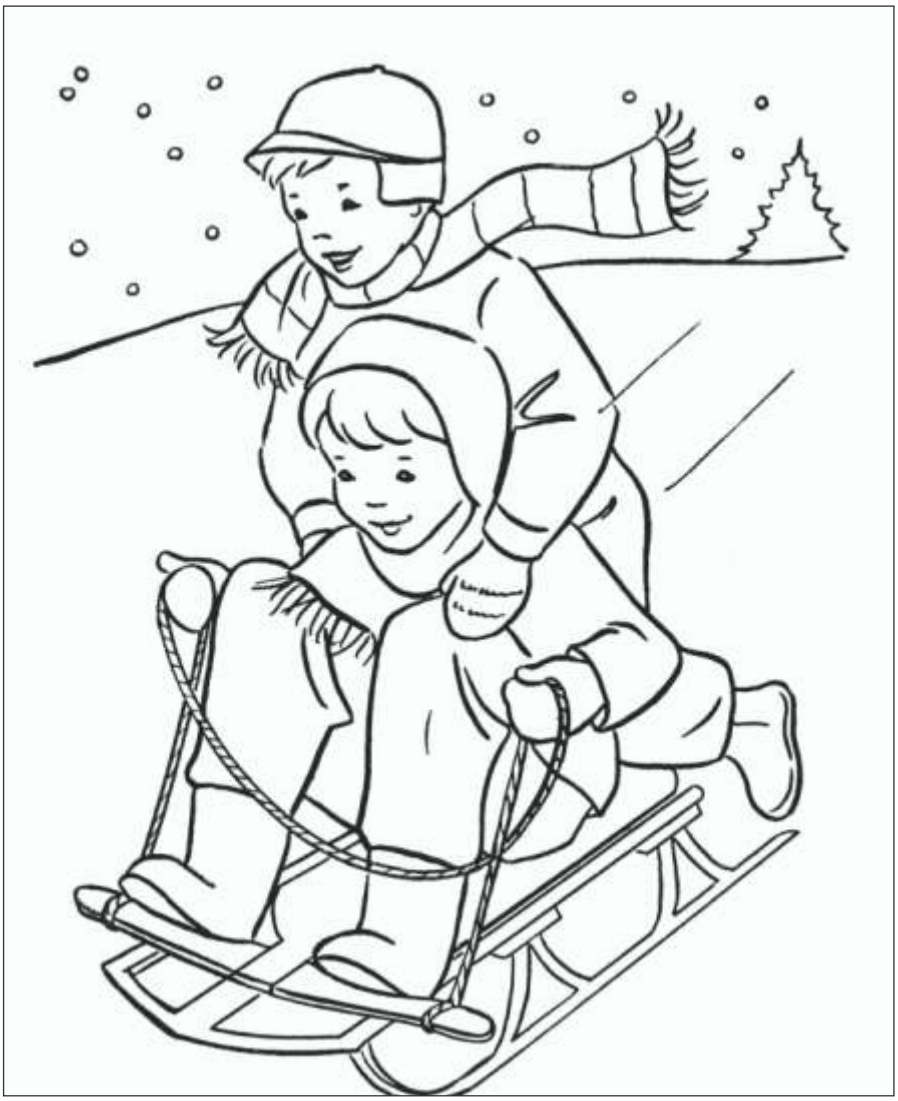

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

रिमझिम फुहारों में भीगता सितम्बर अंक मिला। शिक्षा के बगैर जीवन अधूरा है और जो कुछ भी आज हम हैं तो सिर्फ शिक्षा के जरिये ही हैं।

कहानियों में 'फैसला', 'सफलता का रहस्य' और 'सुन्दरता का घमंड' अच्छी व सच्ची लगीं। गाँधीवादी नेता डॉ. पट्टाभि सीतारमैया पर लिखा प्रेरक-प्रसंग जानदार लगा। 'समुद्री जीव बिल्ली मछली' पर जानकारी रोचक लेख के लिये साधुवाद।

कविताएं भी इस बार मन को छू गईं। खासकर 'शिक्षक दिवस साल में आता' प्रशंसनीय लगी। विशेष लेख 'कैसे बना दुनिया का पहला पुस्तकालय' ज्ञानवर्द्धक था। इसके अलावा 'पढ़ो और हँसो', 'विशाल जीव हिप्पो', 'अनमोल वचन' और 'कभी न भूलो' एवं 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' यह सभी रचनाएं हँसती दुनिया को चार चाँद लगा गईं।

हँसती दुनिया पर एक कविता प्रस्तुत है–

हँसती दुनिया

नये रूप में आती हँसती दुनिया।
छोटे-बड़े सबको भाती हँसती दुनिया।

अच्छे-बुरे का पाठ पढ़ाती हँसती दुनिया।
सच्चे-झूठे का पाठ समझाती हँसती दुनिया।

बच्चों को खूब हँसाती हँसती दुनिया।
सबको दोस्त बनाती हँसती दुनिया।

बच्चों के आगे कदम बढ़ाती हँसती दुनिया।
पढ़ो और लिखो का संदेश फैलती हँसती दुनिया।

– श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बडनेरा, अमरावती)

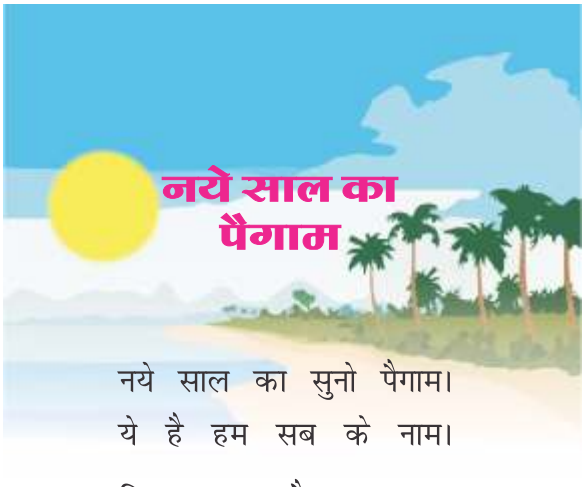

नये साल का सुनो पैगाम।
ये है हम सब के नाम।

मिल-जुलकर है सदा रहना।
नये वर्ष का है कहना।

नफरत सारी भूलें हम।
प्यार बढ़ाएं छोड़े गम।

पिछली छोड़ सभी बातें।
खुशियां बांटे सौगातें।

हो न कभी भी काली रात।
चहुंओर हो नया प्रभात।

दुनिया में भाईचारा हो।
खुशियों का 'चमन' हमारा हो।

– जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

हमें हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। मुझे हँसती दुनिया में कविता, कहानियां, चुटकले बहुत पसन्द हैं।

'पढ़ो और हँसो' पढ़कर मैं अपने दोस्तों को सुनाती हूँ। पढ़कर हम सभी हँसते हुए लोटपोट हो जाते हैं।

हँसती दुनिया मनोरंजन कराने के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक भी है। मेरे परिवार के सभी सदस्य हँसती दुनिया को बहुत पसन्द करते हैं। हँसती दुनिया को जो कोई भी पढ़ता है। इसकी प्रशंसा करता है।

जब हँसती दुनिया घर में आती है तो हम बहन-भाइयों में पहले पढ़ने के लिए होड़ लग जाती है। बच्चों के लिए हँसती दुनिया एक अच्छी पत्रिका है।

– ज्योति शर्मा (चार के.एस.पी.)

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
: Licence No. U (DN)-23/2018-20
: Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)